अध्याय 13

भविष्य का यीशु का प्रकाशन

सुसमाचार के इस विवरण में मरकुस 13 सबसे असामान्य अध्यायों में से एक है। इसका अनोखापन इसकी विस्तारपूर्वक भविष्यद्वाणी से मिलता है। अध्याय के अधिकतर भाग में यरूशलेम के विनाश की यीशु की भविष्यद्वाण्मी है। अध्याय का अंतिम भाग यीशु की वापसी की उसकी संक्षिप्त भविष्यद्वाणी देता है। वह वाला भाग यरूशलेम के विनाश की भविष्यद्वाणी का एक प्रकार का अतिरिक्त भाग या स्पष्टीकरण है। यीशु ने यरूशलेम के विनाश को द्वितीय आगमन से अलग किया जबकि साफ़ तौर पर प्रेरितों ने ऐसा नहीं किया।

पवित्र शास्त्र का यह भाग अंत समय की शिक्षा देने वालों के लिए मुख्य बिन्दु बन गया है जो पवित्र शास्त्र में से मसीह के द्वितीय आगमन के विशेष समय ढूंढ़ना चाहते हैं। अध्याय 13 के साथ ऐसा करना अध्याय का दुरुपयोग करना है। यीशु अपने प्रेरितों को और चेलों को महानगर यरूशलेम के अंत के लिए तैयार कर रहा था। इसका अंत उन भयानक परीक्षाओं में से एक होना था जो उनके सामने आने वाली थीं। उनका प्रभु होते हुए यीशु ईमानदारी से उन्हें इसके लिए तैयार कर रहा था।

यदि कोई इस अध्याय में मसीह के द्वितीय आगमन के भाग के रूप में ''रैप्चर'' (''क लेश'' काल के बाद) की खोज में है तो उसे निराशा होगी। हमारे प्रभु के शब्दों में यह विचार शामिल नहीं है। मत्ती 24 और लूका 21 के समानांतर विवरणों के साथ इस अध्याय की निष्पक्ष और स्पष्ट व्याख्या में यह मानना पड़ेगा कि यीशु ने अपने द्वितीय आगमन का उल्लेख केवल संक्षेप में किया।

इस अध्याय के अच्छे छात्र बनने के लिए, हमें किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले इसमें पाए जाने वाले विभाजनों को ध्यान से देखते हुए, संदर्भ का सही सही इस्तेमाल करना आवश्यक है। इस भविष्यद्वाणी की प्रकृति और उद्देश्य के बारे में हमारे प्रश्नों का उत्तर देने का एकमात्र तर्कसंगत ढंग यही है।

यरूशलेम का विनाश (13:1, 2)[1]

[1]जब वह मन्दिर से निकल रहा था, तो उसके चेलों में से एक ने उस से कहा, ''हे गुरु, देख, कैसे विशाल पत्थर और कैसे भव्य भवन हैं!'' [2]यीशु ने उससे कहा, ''क्या तुम ये बड़े-बड़े भवन देखते हो: यहाँ पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा जो ढाया न जाएगा।''

आयतें 1, 2. यहूदी लोग अपने मन्दिर को सदा तक रहने वाले मन्दिर के रूप में देखते थे। इस उम्मीद से कि उसके इसे बढ़ावा देने से उसे यहूदियों का समर्थन मिल जाएगा हेरोदेस ने, चालीस से अधिक वर्षों तक मन्दिर पर अपने मज़दूर लगा रखे थे। उसे उनका समर्थन नहीं मिला था, परन्तु वह मन्दिर को प्राचीन जगत की सबसे सुन्दर इमारतों में से एक बनाकर, इसे संवारने

में सफल अवश्य हो गया। उसने इसका पूनर्निर्माण का काम 20–19 ई.पू. में आरम्भ किया।[2] विस्तार का काम पूरा हो गया तो मन्दिर लगभग पैंतीस एकड़ की भूमि पर फैल गया।[3] यह निर्माण इस ढंग से करवाया गया था कि लगातार नवीकरण के दौरान बिना किसी रुकावट के बलिदानों तथा सेवाओं का काम चलता रहे। याजक पर्दे लगा लेते थे ताकि मज़दूर पवित्र स्थानों के अंदर देख न पाएं और लोग प्रतिदिन होने वाली मन्दिर की सेवाओं को अनादरपूर्ण ढंग से न देख पाएं।

यूहन्ना 2:20 में वर्णित ''चालीस वर्ष'' उस समय से सम्बन्धित हैं जब मन्दिर का नवनिर्माण आरम्भ हुआ था। यह बात नये नियम की कुछ विशेष बातों में से एक है जिन्हें यहूदी इतिहासकार जोसेफ़स द्वारा दिए गए इतिहास से मिलाया जा सकता है (इ. 37–100)। लूका 3:23 कहता है कि अपनी सेवकाई का आरम्भ करने के समय यीशु ''लगभग तीस वर्ष की आयु का था।'' इसका अर्थ यह हुआ कि हेरोदेस के नवनिर्माण के आरम्भ से छयालीस वर्ष आगे को लेते हुए (यानी 20–19 ई.पू. की तिथि), हम यीशु की सेवकाई के लगभग आरम्भ की तिथि तक पहुंच सकते हैं। हम तर्कपूर्ण ढंग से कह सकते हैं कि उसकी सेवकाई 26 या 27 ई. के लगभग में आरम्भ हुई।

मन्दिर का काम 64 ई. तक पूरा नहीं हुआ था। छह वर्षों बाद, 70 ईसवी में यह नष्ट हो गया। इस सब में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने बलिदान दिए जाने के पुराने नियम के सिस्टम को पूरा करने और अपने पुत्र को आदर देने वाले धर्म का आरम्भ करने के लिए, अपने इच्छा के अनुसार काम कैसे किया।

यीशु ने पहले यहूदियों को बताया था कि उनका घर उनके लिए ''उजाड़'' छोड़ा जा रहा था (मत्ती 23:38)। यह बात विशेषकर मन्दिर के लिए लागू होती होगी। मन्दिर स्वयं मन्दिर के उस आंगन का भाग था जिसके लिए यीशु ने कहा कि **ढाया** जाना था और उसका **पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहना था** (13:2)।

मन्दिर की भव्यता की एक बात पत्थरों का आकार था, विशेषकर मन्दिर के पहाड़ के इर्द-गिर्द बाहरी दीवार पर लगे पत्थर, जो आज तक भी हैं। यह बची हुई दीवार वही है जिसे ''पश्चिमी दीवार'' या ''वेलिंग वॉल'' कहा जाता है। यह मन्दिर के प्रांगन का वह भाग है जिसे हेरोदेस द्वारा विस्तार देने के समय बनाया गया था। इस दीवार पर यहूदियों को आज भी, विशेषकर सब्त के दिन और दूसरे पवित्र दिनों पर प्रार्थना करते हुए पीछे की ओर झुकते हुए देखा जा सकता है। वे प्रार्थनाएं लिखकर दीवार की दरारों में कागज़ लगा देते थे। इस दीवार के पत्थर लगभग पांच फुट ऊंचे हैं और उनमें से कई तो बारह-बारह फुट से भी लम्बे हैं। ''उनमें से अधिकतर पत्थर दो से पांच टन के हैं'' जिनमें सबसे बड़ा पत्थर ''लगभग 400 टन'' का है![4] जोसेफ़स ने कहा कि मन्दिर के पत्थर पैंतालीस हाथ लम्बे, पांच हाथ ऊंचे और छह हाथ चौड़े थे।[5]

लूका 21:5 कहता है कि मन्दिर को ''सुन्दर पत्थरों और भेंट की गई वस्तुओं से संवारा गया'' था। हेरोदेस ने कलाकारों को मानवीय शरीर के जितने बड़े गुच्छों वाले सुनहरी दाख बनाने का आदेश दिया था।[6] अग्रिप्पा प्रथम ने मन्दिर में सोने की ज़ंजीर बनवाई थी।[7] मन्दिर के सम्बन्ध में दी गई दूसरी जानकारी के साथ जोसेफ़स ने याजकों के वस्त्रों की सजावट के धन की बात की; वे गहनों, सोने के मुकुटों और छोटी-छोटी ढालों जैसे बटनों से सज्जित होते थे।[8]

किसी समय इस मन्दिर पर इतनी दौलत का प्रदर्शन होता था जो संसार के किसी दूसरे मन्दिर में नहीं था। यह "सफेद संगमरमर वाली" भव्य इमारत थी "जिसके सामने का पूर्वी भाग सोने की चदरों से ढका हुआ था, जिन पर चढ़ते सूरज की किरणें पड़ी थीं"[9] और पूरा भवन ऐसे दिखाई देता था जैसे यह सीधे परमेश्वर के पास से आया हो।

देखने वाला हर व्यक्ति मन्दिर की अद्वितीय शान को देखकर हैरान रह जाता था। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि चेलों ने मसीह से इसके लिए कहा कि **"हे गुरु, देख, कैसे विशाल पत्थर और कैसे भव्य भवन हैं!"** (13:1)। हर यहूदी इस शानदार भवन की भव्यता पर इतराता था। यहूदियों में एक आम कहावत थी: "जिस किसी ने यरूशलेम को उसकी भव्यता में नहीं देखा, उसने अपने जीवन में कोई नगर ही नहीं देखा। जिस किसी ने मन्दिर को इसके पूरे निर्माण में नहीं देखा, उसने अपने जीवन में शानदार भवन ही नहीं देखा।"[10]

यीशु के समय में पुरानी वाचा का गौरव मन्दिर और "पवित्र नगर" यरूशलेम में था। पुरानी वाचा के पूरा हो जाने पर सांसारिक मन्दिर बेकार हो गया और "अलोप होने" लगा। परमेश्वर के नई वाचा को बनाने के सम्बन्ध में इब्रानियों 8:13 कहता है, "जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है।" भविष्यद्वाणी में बताए हुए इसके भविष्य को जानने के कारण चेलों को मन्दिर में किसी प्रकार का गर्व नहीं करना चाहिए था। मन्दिर का विनाश हो जाने के बाद यरूशलेम से इस्राएल में बलिदान चढ़ाए जाने के स्वीकृत स्थान के रूप में इसका आदर छिन जाना था।

पवित्र शास्त्र के साथ-साथ इतिहास से मिलने वाला एकमात्र महत्वपूर्ण सबक यह है कि परमेश्वर अब अपनी आराधना के लिए मन्दिर का इस्तेमाल नहीं करना चाहता। वहां पर चढ़ाए जाने वाले सब बलिदानों का उद्देश्य यीशु के एक ही बार किए गए बलिदान में पूरा हो चुका था। मसीही लोगों के लिए सांसारिक यरूशलेम का कोई महत्व नहीं है (गला. 4:25, 26) क्योंकि हमारा यरूशलेम वह है "जो परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरने वाला है" (प्रका. 3:12; देखें इब्रा. 12:22), प्रभु की कलीसिया जिसका नमूना है।

हमें सांसारिक इमारतों में नहीं बल्कि परमेश्वर में भरोसा रखना सीखना आवश्यक है, क्योंकि वे चर्च (कलीसिया) नहीं हैं। यीशु के लहू के द्वारा, कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर है, मसीह की आत्मिक देह है जो पृथ्वी और स्वर्ग से छुड़ाए हुए लोगों से बनती है (देखें 1 कुरि. 3:16, 17; 6:19)।

लूका 19:41-44 के अनुसार यीशु पहले ही यरूशलेम नगर पर रोया था और उसने अपने आस पास के लोगों को चेताया था कि इस नगर के साथ क्या होने वाला है:

> जब वह निकट आया तो नगर को देखकर उस पर रोया और कहा, "क्या ही भला होता कि तू; हां, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं। क्योंकि वे दिन तुझ पर आएंगे कि तेरे बैरी मोर्चा बान्धकर तुझे घेर लेंगे, और चारों ओर से तुझे दबाएंगे; और तुझे और तेरे बालकों को जो तुझ में हैं, मिट्टी में मिलाएंगे, और तुझ में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे; क्योंकि तू ने उस अवसर को जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई न पहचाना।"

क्रूस पर चढ़ाए जाने की इन अंतिम घड़ियों में, यीशु ने नगर पर विलाप किया (मत्ती 23:36-39)। उसने वहां उपस्थित लोगों को जिन्होंने मन्दिर के विनाश को देखना था "इस समय के लोग" कहते हुए सम्बोधित किया:

> मैं तुम से सच कहता हूं, ये सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेंगी। "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन पर पथराव करता है। कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूं, परन्तु तुमने न चाहा। देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि अब से जब तक तुम न कहोगे, 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है।' तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।"

चेलों को उन बातों पर जिन्हें वे सुन रहे थे, विश्वास नहीं हुआ होगा, क्योंकि उन्हें लगता था कि यह मन्दिर सदा तक रहेगा। सुन्दर भवन पाने के अर्थ में कोई संसार को पा सकता है, परन्तु यदि वह यीशु को ठुकराकर अपने प्राण को खो दे तो उसे कुछ नहीं मिला (देखें मत्ती 16:26)। बहुत से लोगों ने बहुत सा धन इकट्ठा किया है, केवल मरने के निकट पहुंचकर उन्हें समझ में आया कि वह धन उनके किसी काम का नहीं है।

अलग-अलग चिह्न (13:3-23)

चेलों के प्रश्न (13:3, 4)[11]

[3]जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था, तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने अलग जाकर उससे पूछा, [4]"हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी उस समय का क्या चिह्न होगा?"

मन्दिर के बारे में प्रेरितों को दिए यीशु के जवाब से, वे उलझन में पड़ गए। एक दो दिन पहले उसने यह कहते हुए कि यह "सब जातियों के लिए प्रार्थना का घर" है, मन्दिर को शुद्ध किया था। उसने पवित्र शास्त्र का एक हवाला दिया था जिसमें परमेश्वर को इसे "मेरा घर" कहते हुए दिखाया गया था (मरकुस 11:17; "परमेश्वर का घर"; NCV; देखें मत्ती 21:13)। प्रेरितों ने यह मान लिया होगा कि मन्दिर का विनाश केवल एक ही बात से हो सकता है कि युग का अंत हो जाए और ईश्वरीय शासन के रूप में महिमा के अपने बड़े प्रदर्शन में प्रभु की वापसी हो।

आयतें 3, 4. जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था, तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने अलग जाकर उससे पूछा। प्रेरितों ने यीशु से कितने प्रश्न पूछे थे? जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे में मरकुस 13:3, 4 में चार प्रश्न देखे:[12]

मन्दिर कब नष्ट होगा?
विनाश के पहले के चिह्न क्या होंगे?

उसके आने का चिह्न क्या होगा?
जगत के अंत का चिह्न क्या होगा?

परन्तु चेलों के दिमाग में केवल दो प्रश्न ही घूम रहे होंगे। पहला तो यही होगा कि **ये बातें कब होंगी** [यानी वे घटनाएं जिनसे यरूशलेम का विनाश होना था] **?** दूसरा प्रश्न यही था: **जब ये बातें होंगी तो इसका चिह्न क्या होगा?**

उनके प्रश्न इस बात का संकेत थे कि उन्हें पता था कि यीशु उन्हें बता सकता है कि निकट भविष्य में मन्दिर का क्या होगा। उन्हें यह भी यकीन था कि उसे उन सब बातों का पता है जो संसार के अंत में होने वाली थीं। वे यीशु को सर्वज्ञानी, अंतरयामी नबी के रूप में देखते थे।

पिन्तेकुस्त के दिन के बाद प्रेरितों ने वैसा कोई प्रश्न नहीं पूछा जैसे वे मरकुस 13 में पूछ रहे थे। आत्मा का बपतिस्मा पा लेने के बाद, वे उन ईश्वरीय प्रकाशनों के द्वारा जो उन्हें दिए गए थे, मसीह के राज्य के आत्मिक होने को देखने लगे थे। परमेश्वर ने बदलाव का एक समय दिया ताकि पुराने नियम के काल के खत्म होने पर यहूदी सिस्टम को हटाया जा सके। ऐसा 70 ई. में टाइटस और रोमी सेना द्वारा मन्दिर के विनाश किए जाने के साथ हुआ। ''परमेश्वर ने अपनी विशेष चुनी हुई प्रजा के रूप में यहूदियों के साथ अपने व्यवहारों के 'युग के अंत' को चिह्नित करने के लिए [मन्दिर के विनाश] का इस्तेमाल किया।''[13]

यरूशलेम के इस विनाश के साथ, गोत्रों की बात खत्म हो जानी थी और लेवीय याजकाई जाती रहनी थी। इस कारण मन्दिर को फिर से बहाल करने की कोशिश करना व्यर्थ और असम्भव होना था। पहले, यहूदी लोग अपने पूर्वजों का बड़ा हिसाब रखते थे, यहां तक कि आदम तक के भी। जब लूका ने यीशु की अपनी वंशावली को लिखा तो यहूदियों द्वारा इस जानकारी को सत्यापित किया गया; लूका का ऐसे लिखने का उद्देश्य यही रहा होगा (देखें लूका 3:23-38)।[14]

कुछ टीकाकारों ने तर्क दिया है कि यीशु ने 13:4 में चेलों के प्रश्नों के अपने उत्तरों को, यरूशलेम के विनाश और द्वितीय आगमन दोनों पर लागू करते हुए उन प्रतीकों को दोहरी भूमिका देकर मिला दिया। इस विचार के साथ यीशु का उपदेश चिह्नों का घाल मेल बन जाता है जिसका कोई समझ में आने वाला उत्तर नहीं है। यह उलझन यीशु की बात में नहीं बल्कि टीकाकारों की है। उसके उपदेश को इस प्रकार से नये सिरे से तरतीब देना गलत है जिसमें लगे कि यरूशलेम के विनाश से पहले होने वाली घटनाओं की भविष्यद्वाणी अन्त समय की घटनाएं भी बन गईं, जिसमें उस बड़े क्लेश के कष्टों को और भी कहीं अधिक कठोर रूप में दोहराया जाता है। यीशु ने यह कभी नहीं कहा, न ही इस विचार की सम्भावना की पुष्टि करने का कोई वास्तविक प्रमाण है।

यदि प्रतीकों के दोहरे इस्तेमाल का विचार सही होता तो यरूशलेम के विनाश के चिह्न समय के अंत के निकट होते, जिनसे यीशु के द्वितीय आगमन का आभास होता। इसका अर्थ यह होना था कि उन्होंने द्वितीय आगमन के चिह्नों का काम करना था। यह यीशु की बाद वाली बात से मेल नहीं खाना था कि कोई चिह्न ही नहीं होना था। 13:1-23 में मन्दिर के विनाश की बात करते हुए यीशु ने अपने आने या संसार के अंत के बारे में कुछ नहीं कहा।[15] उसके द्वितीय आगमन का परिचय 13:32 तक नहीं दिया गया, जब उसने ''उस दिन'' यानी न्याय के दिन का उल्लेख किया: ''उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत

और न पुत्र; परन्तु केवल पिता'' (13:32)।[16] ''उस दिन'' के सही-सही समय (देखें मत्ती 7:21-23) की भविष्यद्वाणी नहीं की जा सकती थी, क्योंकि स्वयं प्रभु को भी यह पता नहीं था कि यह आना कब था। पौलुस और पतरस ने भी कहा कि वह ''चोर के आने के जैसा'' होगा (1 थिस्स. 5:2; देखें 2 पतरस 3:10)।

मत्ती में दिए गए विवरण में, समय के अंत के प्रश्न का उसका उत्तर 24:34 में आरम्भ होता है। 24:36 में ''उस दिन'' समय के अंत को कहा गया है जबकि पहले का वाक्यांश ''उन दिनों'' (मत्ती 24:19, 22, 29) यरूशलेम के आने वाले विनाश से सम्बन्धित है,[17] जिसके पहले और बाद में ''कठिन समय'' आने थे (देखें 2 तीम. 3:1)।

''पहले'' चिह्न (13:5-13)[18]

झूठे मसीह (13:5, 6)

[5]यीशु उनसे कहने लगा, ''चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए। [6]बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं वही हूँ!' और बहुतों को भरमाएँगे।''

आयतें 5, 6. ''चिह्नों'' का नाम बताते हुए, यीशु ने कहा, **''चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए। [6]बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं वही हूँ!' और बहुतों को भरमाएँगे।''** पहली सदी के इन ''झूठे मसीहों'' के बारे में बाइबल से बाहर के स्रोतों से हमारे पास बहुत कम जानकारी है। उनकी लहरें थोड़ी देर के लिए रहीं और उनका कोई संस्थान नहीं है; इस कारण ऐतिहासिक रूप में उनके होने की उम्मीद नहीं है।

जोसेफ़स ने कुछ लोगों की बात की है जो यरूशलेम के विनाश से पहले, कुछ यहूदियों को अपने पीछे चलने को कहते थे।[19] प्रेरितों 5:33-37 में गमलीएल द्वारा बताए गए थियूदास और यहूदा ने मसीहा होने का दावा किया, परन्तु उनके अभियान बहुत देर तक नहीं चले। एक लहर तब चली, जब यहूदा ने रोमी कर देने के विरोध में यहूदियों को विद्रोह करने को कहा।[20] शायद प्रेरितों 21:38 में वर्णित एक और ''झूठा मसीहा'' वह ''मिस्री'' ही था।[21] सम्भवतया और ''झूठे मसीह'' जिनका कोई लेखा-जोखा नहीं है इसी दौरान खड़े हुए।

इतिहास में ज्ञात आरम्भिक कलीसिया के युग का अंतिम ''झूठा मसीह'' बार कोकबा (''तारे का पुत्र'') था, जिसका रोम के विरुद्ध विद्रोह 132-135 ई. में बताया गया है। उसने अपने आपको वह दिखाया, जिसके आने की भविष्यद्वाणी गिनती 24:17 में एक तारे के द्वारा की गई थी:

> मैं उसको देखूँगा तो सही, परन्तु अभी नहीं; मैं उसको निहारूँगा तो सही, परन्तु समीप होके नहीं: याक़ूब में से एक तारा उदय होगा, और इस्राएल में से एक राज दण्ड उठेगा; ...

135 इ. में रोमियों ने उसका सिर काट दिया। उसकी लहर आरम्भ से ही काफ़ी प्रसिद्ध हो गई, परन्तु जल्दी ही खत्म हो गई।

कुछ झूठे शिक्षकों की शिक्षाएं जो मसीह की सेवकाई के थोड़ी देर बाद हुए, संसार में

कुछ देर तक रही; दूसरों को जल्दी ही भुला दिया गया। झूठे मसीह, जिन्हें हम जानते हैं, वे उस भविष्यद्वाणी से बिल्कुल मेल खाते हैं जो यीशु ने उनके लिए की। यीशु के भविष्यद्वाणी करने में उसकी सच्चाई पर संदेह नहीं किया जा सकता।

लड़ाइयां (13:7, 8)

[7]"जब तुम लड़ाइयाँ, और लड़ाइयों की चर्चा सुनो, तो न घबराना; क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। [8]क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। हर कहीं भूकम्प होंगे, और अकाल पड़ेंगे।"

आयतें 7, 8 . यरूशलेम में बिगड़ती स्थिति का अर्थ यह नहीं था कि यीशु के मानने वाले निकलकर एक दम से यरूशलेम से भाग जाएं। उन गड़बड़ भरे समयों में **जाति पर जाति, ... चढ़ाई** करते देखना आम बात थी (13:8)।

यीशु ने कहा कि **लड़ाइयाँ, और लड़ाइयों की चर्चा** होनी थीं (13:7)। यह भविष्यद्वाणी उन लड़ाइयों की चेतावनी थी जिनसे यहूदियों ने और यरूशलेम ने प्रभावित होना था। पहली सदी के बाद समय के अन्य कालों में बहुत सी लड़ाइयां हुई हैं। उदाहरण के लिए 1600 और 1980 के बीच यूरोप में तीन सौ लड़ाइयां हुईं। निश्चय ही पहली सदी में इससे अधिक नहीं हुईं; परन्तु 33 और 69 ई. के छोटे से काल के बीच काफ़ी लड़ाइयां हुईं।

पहली सदी में कम से कम तीन लड़ाइयों से जो राजाओं के द्वारा भड़काई गईं, यहूदियों के लिए खतरा होना था। इसके अलावा उन दिनों में तीन प्रसिद्ध अन्यजाति लड़ाइयां यहूदियों के लिए विनाशकारी थीं। उनमें हज़ारों यहूदी मारे गए।[22] ये "पहले" चिह्न थे जो यरूशलेम के विनाश से पहले पूरे हुए, चाहे बिल्कुल पहले नहीं। चिह्नों की बात करते हुए, यीशु ने कहा, **"इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा"** (13:7)।

प्रसिद्ध *पैक्स रोमाना* (रोमी शांति) सदा तक नहीं रहनी थी। 70 ई. की घटनाओं के सम्बन्ध में इतिहास शाक्षी है कि यीशु की भविष्यद्वाणियां शब्दश: पूरी हुई थीं। 69 ई. में कठिन समय आए जब चार अलग-अलग सम्राट एक के बाद एक सत्ता में आए। इसके साथ ही गलील के नगर एक एक करके रोमियों के कब्जे में आ गए।

भूकम्प और अकाल (13:8)

[8]"क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। हर कहीं भूकम्प होंगे, और अकाल पड़ेंगे।"

आयत 8. लगता है कि किसी सदी में इतने **भूकम्प** नहीं आए जितने पहली सदी में। एक भूकम्प क्रेते में नीरो के अपना तोगा ग्रहण करने के 46-47 ई. में और एक रोम में आया[23] (51 ई.)। एक भूकम्प और लौदीकिया में आया (61 ई.) और एक पोंपई में (62 या 63 ई.)। ये सभी बड़े भूकम्प थे। पलिश्तीन में भूकम्प की गतिविधि के अपने दस्तावेज में डी. एच. कालनेर-

अमिरान ने उस समय के दौरान होने वाले चार भूकम्पों का उल्लेख किया।[24]

अकाल के सम्बन्ध में स्युटोनियुस (लगभग 69–122 ई.)[25] और टेसिटुस (56–120 ई.)[26] ने रोम में एक बड़े अकाल का उल्लेख किया जो 50 ईसवी में कलौदियुस के शासनकाल में पड़ा, जिसकी भविष्यद्वाणी सम्भवतया प्रेरितों 11:28 में अगबुस ने की थी। ''जोसेफ़स, टेसिटुस [स्टोनियुस] जैसे अविश्वासी लेखकों द्वारा इन सभी चिह्नों का उल्लेख किया गया है, ... जो इनकी बात इनके महत्व के कारण करते हैं न कि मसीह की भविष्यद्वाणी के किसी संदर्भ से जोड़कर।''[27]

ये चिह्न अंत का चिह्न नहीं थे। वे केवल **पीड़ाओं का आरम्भ** यानी ''अंतिम लक्ष्य की ओर ले जाने वाले पहले कदम'' थे।[28] ये चिह्न यरूशलेम के विनाश के थे न कि संसार के अंत के चिह्न। यीशु ने समझाया कि ये भूकम्प यरूशलेम और मन्दिर के अंत समयों का केवल ''आरम्भ'' ही होने थे, क्योंकि वे ''निकट'' चिह्नों का प्रारम्भिक दौर होने थे।

आश्चर्य की बात है कि आज बहुत से लोग लड़ाइयों, भूकम्पों और अकालों और झूठे मसीहों को इस बात के संकेतों के रूप में देखते हैं कि समय का अंत निकट आ गया है, जबकि यीशु ने साफ़ तौर पर कहा कि ये चिह्न चेतावनियां थे, परन्तु अंत यानी यरूशलेम का विनाश ''अभी'' नहीं होना था (13:7)। लड़ाइयों, भूकम्पों, अकालों और झूठे मसीहों का इस्तेमाल यरूशलेम के विनाश के लिए चेलों को तैयार करने के लिए किया गया। सच्चाई के नियमों की कई प्रासंगिकताएं होती हैं परन्तु विशेष भविष्यद्वाणी कुछ विशेष पूरे होने तक चिह्नित होनी आवश्यक है, जिसकी भविष्यद्वाणी की गई थी। यह दिखाया जा सकता है कि ये सब घटनाएं 70 ई. में यरूशलेम के विनाश से पहले पहले हो गईं। ये चिह्न मसीह के द्वितीय आगमन से जुड़े चिह्न नहीं थे।

सताव और घृणा (13:9–13)

9''परन्तु तुम अपने विषय में चौकस रहो; क्योंकि लोग तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे और तुम पंचायतों में पीटे जाओगे, और मेरे कारण हाकिमों और राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उनके लिये गवाही हो। 10पर अवश्य है कि पहले सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए। 11जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहले से चिन्ता न करना कि हम क्या कहेंगे; पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया जाए वही कहना; क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है। 12भाई को भाई, और पिता को पुत्र घात के लिए सौंपेंगे, और बच्चे माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। 13और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे; पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।''

आयतें 9, 10. अपने उपदेश में यहां पर आकर, यीशु ने अपने प्रेरितों को एक बड़ी चेतावनी दी: ''**तुम अपने विषय में चौकस रहो; क्योंकि लोग तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे और तुम पंचायतों में पीटे जाओगे, और मेरे कारण हाकिमों और राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उनके लिये गवाही हो**'' (13:9)। इस ताड़ना का क्या कारण है? वह यह स्पष्ट कर रहा था कि वहां उपस्थित कई लोगों ने उन घटनाओं को जिनकी उसने भविष्यद्वाणी

की थी, पूरा होते देखने के लिए जीवित रहना था। यरूशलेम के विनाश से पहले सुसमाचार ''हाकिमों'' और ''राजाओं'' और ''जब जातियों'' में सुनाया जाना था (13:10)। यदि यह चेतावनी आज के लिए होती तो यीशु ने यह नहीं कहना था, **''अवश्य है कि पहले सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए''** (13:10)।

मत्ती 24:9 में यीशु ने कहा, ''तब वह क्लेश देने के लिए तुम्हें पकड़वाएंगे और मार डालेंगे।'' उसकी चेतावनी बारहों को पहले दी गई चेतावनी का दोहराव था: ''परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे, और अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे। तुम मेरे लिये हाकिमों और राजाओं के सामने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिये पहुंचाए जाओगे'' (मत्ती 10:17, 18)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक पुष्टि करती है कि प्रेरितों तथा अन्य लोगों के अलग-अलग हाकिमों के सामने पेश किए जाने ''पंचायतों'' (13:9) शब्द (συνέδριον, *sunedrion*) से लिया गया है जो कि महासभा (''Sanhedrin'') के लिए यूनानी शब्द है। मसीही अगुओं को बहुत बार यहूदियों की बड़ी अदालत के सामने लाया जाता था। आम तौर पर आरम्भिक मसीही अधिकारियों के सामने अपनी सफ़ाई देते समय अपने बचाव के रूप में मसीहियत का इस्तेमाल करते थे। कितने हाकिमों ने परमेश्वर के वचन और मसीहियत की बुनियादी बातों को सुना, जानने का हमारे पास कोई तरीका नहीं है।

यह बहुत अधिक स्पष्ट है कि मसीही लोगों को जहां भी वे रहते और काम करते थे, यहूदियों और रोमी अधिकारियों द्वारा सताव किया जाता था। यहूदी लोग मसीही लोगों का सताव बहुत अधिक करते थे (प्रेरितों 8:1-3), और सदियों तक अन्यजातियों में द्वारा वैसा ही सताव किया जाना जारी रहा।

पौलुस ने फेलिक्स, फेस्तुस और हेरोदेस अग्रिप्पा जैसे राजाओं के सामने अपनी सफ़ाई दी। जब वह वह फेस्तुस के सामने जाने पर उसने कैसर के सामने जाने के अपने अधिकार का दावा किया। प्रेरितों 25:12 में फेस्तुस ने उससे कहा, ''तू कैसर ही के पास जाएगा।'' स्वर्गदूत की ओर से पौलुस को यह वायदा किया गया, ''तूझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है'' (प्रेरितों 27:24)। 70 ई. से पहले वह कैसर के सामने गया और शायद बरी हो गया।

टेसिटुस जैसे लोगों द्वारा दिए गए दस्तावेज़ों में नीरो के शासनकाल में मसीही लोगों के सताए जाने की बातें पता चलती हैं।[29] रोम में पवित्र लोगों पर नीरो के कड़े सताव 60 ई. के दशक में हुए। 90 के दशक में रोमी अधिकारियों द्वारा किए जाने वाले लम्बे सतावों का एक कारण कैसर की पूजा न करना था।[30] प्लीनी द्वारा भी सतावों की बात बताई गई।[31] 49 ई. में कलौदियुस द्वारा यहूदियों के सताव में मसीही लोगों का रोम से निकाले जाना भी शामिल था (प्रेरितों 18:2)।

सचमुच में, यीशु ने यहूदी जाति के अंतिम विनाश के पक्के चिह्न के रूप में सतावों को जोड़ा। परन्तु इस बड़े सताव से कलीसिया नष्ट नहीं हुई। कुछ प्रकार से, इससे वास्तव में कलीसिया बढ़ी ही। टरटुलियन (160-220 ई.) ने अपने सताने वालों से कहा, ''परन्तु सरगर्मी से लगे रहो, ... हमें मार डालो, हमें यातनाएं दो, हमें दण्ड दो, हमें धूल में मिला दो; तुम्हारा अन्याय इस बात का प्रमाण है कि हम निर्दोष हैं। ... जितना तुम हमें मिटाओगे, उतना ही हम बढ़ेंगे; मसीही लोगों का लहू बीज है।''[32] सताव के समय में ऐसी बढ़ोतरी हो सकती है जो

किसी और प्रकार से नहीं होती।

सताव हमेशा लोगों और अधिकारियों द्वारा परमेश्वर की सच्चाई का विरोध करने के कारण ही हुआ है। इन सतावों ने समर्पित मसीहियों को उदासीन और ढोंगी मसीहियों से अलग कर दिया। सताव हमेशा मसीही लोगों का विरोध करके उन पर आक्रमण करेगा। आज भी यह सताव, जारी है। इतिहास के छात्र दावा करते हैं कि बीसवीं सदी में मसीह में अपने विश्वास के कारण मरने वाले लोगों की संख्या पिछली सब सदियों से बढ़कर है।

सताव की यीशु की भविष्यद्वाणियों में यरूशलेम के तुरन्त विनाश की चेतावनी नहीं थी, परन्तु उससे उसके मानने वालों को उन आने वाले ''निकट'' चिह्नों के लिए तैयारी करने का अवसर मिल गया। कलीसिया के आरम्भिक वर्ष कठिन और परेशानी वाले होने थे।

प्रभु द्वारा की गई भविष्यद्वाणी में हैरान करने वाली बात यह है कि ''अंत''[33] सुसमाचार के ''सब जातियों'' में प्रचार करने के बाद ही होना था (13:10; मत्ती 24:14)। क्या यह पहली सदी में हो गया? हां, बिल्कुल! पौलुस ने कुलुस्सियों 1:5, 6, 23 में इसकी पुष्टि की। परन्तु ''जगत'' और ''सारी सृष्टि'' उस समय का रोमी जगत ही होगा, जैसा कि लूका 2:1 यह कहते हुए सुझाव देता है कि ''सारे जगत के लोगों'' की जनगणना की गई। सुसमाचार हर किसी के लिए वैसे ही उपलब्ध करवाया गया था जैसे यहूदिया के ''सब'' लोगों को यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिया गया था। (हम जानते हैं कि उस ''सब'' में कुछ फरीसी और व्यवस्थापक शामिल नहीं थे; मरकुस 1:5; लूका 7:30.)

समय के किसी भी काल से सताव का तनाव हो सकता है, परन्तु ये चिह्न यरूशलेम के विनाश से पहले पूरे हो गए थे। बाइबल के इस भाग की कोई भी भविष्यद्वाणी हमारे समय में पूरी होने के लिए नहीं बची हैं।

आयत 11. इस आयत में यीशु ने बार-बार ''तुम'' सर्वनाम का इस्तेमाल किया (NASB में पांच बार)। वह अपने प्रेरितों से बात कर रहा था, जिन्हें उन पर पवित्र आत्मा के उतरने पर बोलने की प्रेरणा दी जानी थी। आत्मा की अगुआई की प्रतिज्ञा मरकुस 16:17, 18, 20 और लूका 24:49 में भी दर्ज है। यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया कि उसने उन्हें कभी नहीं छोड़ना था। आत्मा ने उन्हें चमत्कारी शक्तियां और किसी भी प्रकार का अतिरिक्त ज्ञान जिसकी उन्हें आवश्यकता हो, देना था।

आज अपने लिए लागू करते हुए हम 13:11 वाले वायदे को ना सोचें, क्योंकि इसका अर्थ यह होगा कि परमेश्वर हमें सीधे बताता है कि हम क्या कहें, जैसा कि प्रेरितों को प्रतिज्ञा दी गई थी: **''जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहले से चिन्ता न करना कि हम क्या कहेंगे; पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया जाए वही कहना; क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है।''** यह यीशु द्वारा उनसे पहले कही गई बात से मेल खाता है: ''जब वे तुम्हें पकड़वाएंगे तो यह चिन्ता न करता कि हम किस रीति से या क्या कहेंगे, क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा, वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा। क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है'' (मत्ती 10:19, 20)।

आत्मा की अगुआई की इस प्रतिज्ञा का इस्तेमाल परमेश्वर के वचन का प्रचार करने से पहले इसका अध्ययन करने को नज़रअंदाज़ करने के प्रचारकों के लिए बहाने के रूप में नहीं

किया जाना चाहिए। यह बारहों को दी गई पहली आज्ञा तक सीमित था। और वचनों से यह स्पष्ट होता है कि प्रेरितों को विश्वव्यापी प्रचार तथा सच्चाई की शिक्षा देने के लिए आत्मा की शक्तियां मिलनी थीं (देखें मरकुस 16:20; प्रेरितों 1:8)।

यदि कोई चेला कैदी हो जाता या किसी और प्रकार से बंदी बनाकर ले जाया जाता, तो उसने बचाव के लिए उसकी अपनी योजना पर निर्भर नहीं होना था क्योंकि वह "कपटपूर्ण छिपाव या भेद की कोशिश कर सकता था।"[34] समझने की योग्यता पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से मिलनी थी जो प्रेरितों 2:1-4 में प्रेरितों को मिला था। इस प्रतिज्ञा का आंशिक रूप में पूरा होना महासभा के सामने पतरस के अधिकारपूर्ण संदेश में मिलता है, जो उसने आत्मा के द्वारा दिया:

> तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा, "हे लोगों के सरदारो और पुरनियो, इस दुर्बल मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है, यदि आज हम से उसके विषय में पूछ-ताछ की जाती है, कि वह कैसे अच्छा हुआ। तो तुम सब और सारे इस्राएली लोग जान लें ..." (प्रेरितों 4:8-10)।

जैसे ईश्वरीय अधिकार से यीशु बात करता था वैसा ही अधिकार पिन्तेकुस्त वाले दिन आत्मा के द्वारा प्रेरितों को दिया जाना था। लूका 21:15 में यीशु ने कहा, "क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा कि तुम्हारे सब विरोधी सामना या खण्डन न कर सकेंगे।"

लूका 21:14-19 का पूरा संदर्भ प्रेरितों के लिए यीशु का आदेश है कि किसी भी प्रकार के न्यायाधीश के सामने लाए जाने पर वे यह चिंता न करें कि उन्होंने क्या कहना था। यहूदी महासभा के सामने स्तिफनुस की टिप्पणियां (प्रेरितों 7) और हाकिम फेलिक्स तथा राजा अग्रिप्पा के सामने पौलुस की गवाहियों (प्रेरितों 24 और 26) में विरोधियों के सामने आत्मा के द्वारा दिए जाने वाले संदेशों के उदाहरण हैं। आत्मा के द्वारा पौलुस ने राजा अग्रिप्पा को यह लाजवाब निष्कर्ष दिया:

> परन्तु परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूं और छोटे बड़े सभी के सामने गवाही देता हूं, और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता जो भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने भी कहा कि होनेवाली हैं, कि मसीह को दु:ख उठाना होगा, और वही सब से पहले मरे हुओं में से जी उठकर, हमारे लोगों में अन्यजातियों में ज्योति का प्रचार करेगा (प्रेरितों 26:22, 23)।

यदि हाकिम फेस्तुस में थोड़ी ईमानदारी और सच्चाई होती तो निश्चय ही उसने यीशु को प्रभु होना मान लेना था, परन्तु उसने अपने निर्णय को टाल दिया। रोम के हाकिम और रोम के दर्जनों अधिकारियों के वहां होने के कारण उसके लिए नासरत के मसीहा को मानने के लिए दबाव बहुत अधिक था।

आयत 12. यीशु ने कहा कि आने वाले सताव में, "**भाई को भाई, और पिता को पुत्र घात के लिए सौंपेंगे, और बच्चे माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे।**" बच्चों के लिए अपने माता-पिता पर आरोप लगाने से बढ़कर कोई दु:खद घटना नहीं हो सकती जिससे उन पर सताव हो और उनकी मृत्यु हो जाए। रोमी साम्राज्य में मुखबिर होते थे जो अपने ही परिवारों के साथ विश्वासघात करते थे और उन्हें दण्ड या मृत्यु दिलवाते थे। यीशु को पता था कि

ऐसा होने वाला है (देखें मत्ती 10:34–36)। फिर भी, कोई भी चीज़, यहां तक कि अधोलोक भी कलीसिया के विरोध में प्रबल नहीं हो सकती (मत्ती 16:18)। न तो सताव हो सकता है और न ही मृत्यु हो सकती है।

आयत 13. यीशु ने कहा कि मसीही लोगों से **सब** ने **बैर** रखना था। स्पष्टतया यह भविष्यद्वाणी हर विश्वासी मसीही पर लागू नहीं होती, न ही इसका अर्थ यह है कि मसीही लोगों ने एक–दूसरे से घृणा करने लगना था। ''सब लोग बैर करेंगे'' का अर्थ स्पष्टतया ''अधिकतर लोग बैर करेंगे'' था। मत्ती 3:5, 6 की तरह यह एक और बार है जिसकी प्रतीकात्मक व्यापकता है। इसका अर्थ बहुतों के लिए है, न कि हर किसी के लिए। कई बार ''सब'' का अर्थ केवल प्रसिद्ध विचार या जन भावना होता है; यानी ''सब'' का अर्थ हमेशा ''सार लोग'' नहीं होता।

मसीही लोगों से इतनी घृणा क्यों की जानी थी? वे एक अलग समूह थे जो यीशु को छोड़ किसी और उद्धारकर्त्ता को नहीं मानते थे। ''किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (प्रेरितों 4:12)।

दूसरी सदी में टेसिटुस और स्युटोनियुस ने मसीही लोगों के विश्वास को ''शैतानी अंधविश्वास''[35] कहा। विश्वासी लोग कैसर को ''प्रभु'' मानकर उसकी राजभक्ति की शपथ नहीं लेते थे। वे उसे देवता नहीं मानते थे, जिस कारण उन्हें देशद्रोही माना जाता था। कुछ सीमा तक उनके लिए यह कहना सही था, क्योंकि उनकी आस्था उसके ऊपर थी (फिलि. 3:20)। मूर्तिपूजक लोग भी उनसे घृणा करते थे और उन्हें ''नास्तिक'' कहते थे, क्योंकि उनका कोई दिखाई देने वाला देवता नहीं था। एक और दृष्टिकोण से मसीही लोग सबसे बढ़िया नागरिक थे क्योंकि वे परमेश्वर के कानून को तोड़ने वाले कानून को छोड़कर, बाकी हर कानून को मानते थे (रोमियों 13:1–6; प्रेरितों 5:29)।

मरकुस 13:13 का धीरज स्पष्ट तौर पर प्रकाशितवाक्य 2:10 में विश्वासी होने के जैसा है (यानी यदि विश्वास के लिए मरना भी पड़े तो मरने तक विश्वासी रहना)। **पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।** ''धीरज धरने'' (ὑπομένω, *hupomenō*) का अर्थ ''विरोध होने पर विश्वास को बनाए रखना या होने वाली कार्यवाही पर *टिके रहना*''; धीरज धरने वाला व्यक्ति ''अटल रहता है।''[36] प्रेरितों के हिस्से में दु:ख आने की बात साबित हो गई। चेतावनी के चिह्नों को पूरा होते देख यरूशलेम में रहकर यीशु के निर्देश को न मानने वाला चाहे जो भी हो, उसने धीरज की कमी को दिखाया। निश्चय ही यह मसीह के निर्देशों में कमज़ोर विश्वास का संकेत था और इस आज्ञा न मानने के अस्थाई प्रमाण खतरनाक होने थे।

इस वचन को यह कहने के लिए तोड़ा मरोड़ा नहीं जाना चाहिए कि धीरज रखना बंद कर देने वाला व्यक्ति वास्तव में कभी मसीही था ही नहीं। मरकुस में यह वचन न तो ऐसा कुछ कहता है और न ही इस विचार का संकेत देता है। यह यीशु की शिक्षा को बिगाड़ना है। सचमुच में परिवर्तित होने वाले कुछ लोगों ने वचन की सामर्थ को रोकने के लिए संसार की चिंताओं को आने दिया (देखें लूका 8:13, 14)

''निकट'' चिह्न (13:14–23)

''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु'' (13:14–16)[37]

[14]''अतः जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जहाँ उचित नहीं वहाँ खड़ी देखो, (पढ़नेवाला समझ ले) तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएँ; [15]जो छत पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए; [16]और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे।''

आयत 14. पढ़नेवाला समझ ले की ताड़ना पहली सदी के हर पाठक के लिए यीशु की बात को समझने के लिए बहुत अधिक ध्यान देने के लिए कहना था।

उजाड़नेवाली घृणित वस्तु 165 ई.पू. में अंतियोकुस एपिफेनस की हरकतों की ओर संकेत था। इस दुष्ट हाकिम ने यहूदियों को मन्दिर में परमेश्वर की वेदी पर सूअर चढ़ाने के लिए विवश किया था।[38] इस संदर्भ में यीशु मसीही लोगों से इस चिह्न के **यहूदिया में** पूरा होते देखने पर **पहाड़ों पर भाग** जाने के उसी वाक्यांश का इस्तेमाल कर रहा था, क्योंकि यरूशलेम नष्ट होने वाला था।

लूका 21:20 बताता है कि ''उजाड़नेवाली घृणित वस्तु'' का अर्थ वह समय था जब ''यरूशलेम सेनाओं से घिरा हुआ'' होना था। यह इस बात का संकेत होना था कि इसका उजड़ना निकट है, और मसीह की भविष्यद्वाणी में विश्वास करने वालों के लिए रोम के इन सिपाहियों से जो यरूशलेम को नष्ट करने के लिए आ रहे थे, भाग जाने का सही समय होना था। इस विनाश की अनुमति परमेश्वर की ओर से दी गई थी, क्योंकि बहुत से यहूदियों ने यीशु को मसीहा मानने से इनकार कर दिया था।

''उजाड़नेवाली घृणित वस्तु'' (βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως, *bdelugma tēs erēmōseōs*)[39] वाक्यांश दानिय्येल 9:27;[40] 11:31; और 12:11 वाली भविष्यद्वाणियों में मिलता है। ऐसी शब्दावली उपयुक्त रूप में रोमियों के लिए लागू होती है क्योंकि मूर्तिपूजक सेनाओं का यरूशलेम में प्रवेश सब यहूदियों के लिए घृणित होना था।[41] रोमियों के झण्डों पर कैसर की छवियां थीं जो यहूदियों की नज़र में मूर्तिपूजा थी; इसलिए उनका पवित्र मन्दिर के निकट होना भी परमेश्वर की निन्दा था।

सेना ने **जहां जहाँ उचित नहीं वहाँ खड़ी** होना था, जो कि अवश्य ही ''पवित्र स्थान'' के लिए कहा गया। ''इसलिये जब तुम उस *उजाड़नेवाली घृणित वस्तु* को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, *पवित्र स्थान में खड़ी* हुई देखो ...'' (मत्ती 24:15)। ''पवित्र स्थान'' और ''परम पवित्र स्थान'' यहूदी मन्दिर के भागों को दिए गए नाम थे (इब्रा. 9:2, 3)। परन्तु मत्ती 24:15 में (ἐν τόπῳ ἁγίῳ, *en topō hagiō*) का शब्दशः अर्थ ''एक पवित्र स्थान में'' है। यहूदी लोगों के लिए ''पवित्र स्थान'' का अर्थ केवल मन्दिर ही नहीं; बल्कि उनका नगर और आस पास का इलाका भी था। यरूशलेम ''पवित्र नगर'' था और आज भी कहा जाता है (देखें मत्ती 4:5)। मन्दिर को ''इस पवित्र स्थान'' कहकर सम्बोधित किया जाता था (देखें प्रेरितों 6:13; 21:28)।

मसीही व्यक्ति की देह ''पवित्र आत्मा का मन्दिर'' है (1 कुरि. 6:19); और पूरी कलीसिया, यानी विश्वव्यापी कलीसिया ''पवित्र लोग'' (1 पतरस 2:9), जो नये नियम में पवित्र मन्दिर है (1 कुरि. 3:17)।[42] इसके अलावा ''पवित्र स्थान'' पदनाम का इस्तेमाल प्रतीकात्मक रूप में स्वर्ग अर्थात जगह के लिए भी हो सकता है जहां यीशु बलिदान का अपना लहू लेकर लौट गया (इब्रा. 9:12, 24, 25)।

मसीही इतिहासकार यूसबियुस (लगभग 263-339 ई.) ने लिखा कि परमेश्वर के लोगों को सेनाओं द्वारा नगर की घेराबंदी के चिह्न की समझ आ गई और वे भाग गए: ''यरूशलेम की कलीसिया ... की पूरी देह, ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा आज्ञा पाकर ... युद्ध से पहले नगर से निकल गई और यरदन के पार पेला नामक एक नगर में रहने लगी।''[43] यूसबियुस यह कह रहा हो सकता है कि मसीही लोगों को एक और प्रकाशन मिला, जैसा कि अगबुस नबी तथा अन्य नबियों की ओर से दिया गया (प्रेरितों 11:28; 21:10, 11)। यह सम्भव है कि प्रभु ने यरूशलेम की कलीसिया के अगुओं (भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों) पर और विस्तारपूर्वक बातें प्रकट की हों।

यरूशलेम के घिरे हुए होने का चिह्न नगर के सब मसीहियों को प्रेरितों की शिक्षा से, 66 ई. वाले युद्ध के आरम्भ होने से बहुत पहले पता चल गया होगा। जोसेफ़स ने मसीही लोगों के बच जाने का वर्णन इस प्रकार से किया है: ''बहुत से नामी यहूदी नगर से ऐसे तैरकर निकल गए जैसे किसी बेड़े के डूब जाने पर लोग तैर जाते हैं।''[44] रोमी लोग वास्तव में घेराबंदी के अंतिम चरण के निकट तक मन्दिर में नहीं आए थे। तब मसीही लोगों के लिए भाग जाने का कोई अवसर नहीं होना था।

मरकुस 13 के पूरे संदर्भ में, यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह यरूशलेम से भाग जाने की बात कर रहा था, न कि संसार के अंत में ''कलेश'' की (13:19; देखें मत्ती 24:21, 29)। लोग यरूशलेम के विनाश के आस-पास की घटनाओं को आश्चर्य की ओर देखते हुए, पवित्र शास्त्र की सामान्य समझ को तोड़ते मरोड़ते हैं।[45] वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे ने दावा किया कि मरकुस 13:14 में ''कोष्ठक'' ''विराम'' नगर के पतन की घटनाओं और ''बड़े क्लेश'' की घटनाओं के अंतराल के समय पर लागू होता है।[46] ''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु'' की बात करते हुए यीशु पहली सदी की घटनाओं की बात कर रहा था न कि बाद की किसी सदी की घटनाओं की।

परन्तु बहुत से लोगों ने बाइबल का गलत अर्थ निकाला है। इस वचन में द्वितीय आगमन के चिह्न ढूंढ़ने की कोशिश करते हुए, कइयों का कहना है कि 70 ई. में यरूशलेम के विनाश से जुड़ी घटनाओं का मसीही युग के अंत में मसीह विरोधी के आने के साथ बड़े क्लेश में अलग और अंतिम प्रासंगिकता है। इस विचार को दानिय्येल 9:25, 26 के साथ जोड़ा जाता है जहां ''प्रधान'' के लिए इब्रानी शब्द (נָגִיד, *nagid*) के लिए शब्द, ''अभिषिक्त'' के लिए शब्द (מָשִׁיחַ, *Mashiach*) के साथ मिलता है। इन शब्दों का अर्थ ''अभिषिक्त प्रधान'' या जैसा कि नये नियम में है, ''मसीह'' होना चाहिए। उसे ''प्रायश्चित'' और ''युग युग की धार्मिकता'' बनाया जाना था। उसे ''प्रायश्चित'' बनाकर ''युग युग की धार्मिकता'' को लाया जाना था (दानिय्येल 9:24)। परन्तु वियर्सबे ने उसे आने वाले ''मसीह विरोधी'' में बदल दिया और कल्पना से उसे प्रकाशितवाक्य 13; 14 वाला ''पशु'' भी बना दिया।[47] यह समझ पवित्र शास्त्र

की सावधानी से की गई व्याख्या नहीं है।

नये नियम में उस अंतिम दिन किसी मसीह-विरोधी, समय के अंत के निकट किसी बड़े क लेश, अस्थाई रैप्चर या पृथ्वी पर मसीह के एक हज़ार वर्ष के राज्य का कोई उल्लेख नहीं है। बल्कि अपनी मृत्यु से एक रात पहले यीशु ने प्रेरितों को बताया कि शीघ्र ही उसने "अब जगत में न" रहना था (यूहन्ना 17:11)। उसने आत्मा में अपने मानने वालों के साथ होना था, परन्तु पृथ्वी पर शारीरिक रूप में फिर नहीं होना था। पृथ्वी पर का उसका प्रवास पूरा हो गया था।

आयतें 15, 16. यरूशलेम से भागने का समय आने पर मसीही लोगों को अपना सामान पीछे छोड़ देना पड़ना था। यीशु के निर्देश स्पष्ट थे: "**जो छत पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए; और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे।**" युद्ध के समय के शरणार्थियों ने कई बार पाया है कि उसका सामान सफ़र में उनके लिए रुकावट बन गया, जिससे पीछे लगी सेना ने उसे पकड़ लिया। हलका सामान लेकर सफ़र करना यरूशलेम से उसके बचाव को और आसान कर सकता था। जब किसी की अपनी जान खतरे में पड़ी हुई हो तो सामान साथ लेने का क्या लाभ होना था?

मसीही लोग नगर से भाग गए परन्तु विश्वास न करने वाले यहूदी नगर में यह सोचकर इकट्ठा हो गए कि वे लूटपाट करने वाले सिपाहियों से बचे हुए हैं।[48] "छत पर" वे लोग थे जो गर्मियों के मौसम में ऊपर सो रहे थे। चपटी छतों पर बाहर लगी सीढ़ियों पर से जाया जा सकता था, तो घरों की छतों पर रहने वाले घर के अंदर जाए बिना बच सकते थे।[49] "खेत में" काम करने वालों ने अपने कपड़े लेने के लिए आकर समय बर्बाद नहीं करना था।

यरूशलेम के विनाश के साथ, मन्दिर खत्म हो जाना था जो कि परमेश्वर की आराधना का सही स्थान था। इस पतन से "अब्राहम की संतान का 2000 वर्ष का प्रिय प्रजा होने का पद खत्म हो गया, और इतिहास की परमेश्वर की योजना में किसी भी अन्य घटना से न तो मेल खाता है और न उसके जैसा है।"[50]

चुने हुओं के कारण उन दिनों को घटाया गया (13:17-20)[51]

17"उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय हाय! 18और प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े में न हो। 19क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे कि सृष्टि के आरम्भ से, जो परमेश्वर ने सृजी है, अब तक न तो हुए और न फिर कभी होंगे। 20यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता, तो कोई प्राणी भी न बचता; परन्तु उन चुने हुओं के कारण जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया।"

आयत 17. मसीही लोगों के नगर से भागने पर, उनका भागना कठिन परिस्थितियों से जटिल हो जाना था। **गर्भवती** या **दूध पिलाती** स्त्रियों के लिए विशेषकर यह तनाव भरा होना था।

आयत 18. यीशु ने उनसे कहा कि **प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े में न हो**। मत्ती 24:20 में यीशु ने कहा कि उसके चेले प्रार्थना करें कि उनका जाना सर्दियों में या सब्त के दिन न हो। सर्दियों के मौसम से कई कठिनाइयां हो सकती थीं और कइयों ने सब्त के दिन सफ़र करना सही नहीं मानना था।

मसीही लोग यदि सामर्थ और सहायता के लिए प्रार्थना करते तो परमेश्वर समय को नियन्त्रित कर सकता था और उसने करना था। संयोग से, लड़ाई 66 ई. के मई माह में आरम्भ हुई।[52] विश्वासियों के लिए नगर से भागने का समय आने पर मौसम काफ़ी सुहाना था। निश्चय ही बहुत से लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर मिल गया था!

आयत 19. फिर भी घोर कष्ट आना था। यह कष्ट ऐसा होना था जैसा यरूशलेम के विनाश के परिणाम से पहले कभी नहीं हुआ था। **वे दिन ऐसे क्लेश के** होने थे **कि सृष्टि के आरम्भ से, जो परमेश्वर ने सृजी है, अब तक न तो हुए और न फिर कभी होंगे**। जोसेफ़स ने कहा कि लोग कुछ ही दिनों में भुखमरी, महामारी, और तलवार से मरने लगे।[53] नगर के विनाश के सम्बन्ध में, उसने कहा, ''मुझे लगता है कि संसार के आरम्भ से, सब लोगों की दुर्गति, यदि यहूदियों के इन दिनों से मिलाई जाए, तो इतनी बड़ी नहीं थी जितनी उनकी।''[54]

आयत 20. अपने **चुने हुओं** को बचाने के लिए परमेश्वर ने **उन दिनों को घटाया**। यह देखना हैरानी की बात है कि परमेश्वर अपने पवित्र लोगों की रक्षा के लिए क्या कर सकता है। यदि परमेश्वर उन दिनों को न घटाता, तो **तो कोई प्राणी भी न बचता**। परमेश्वर हमें अपने ''चुने हुए'' लोग बना लेता है जब हम उसके पुत्र के सुसमाचार को मानते हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 2:13, 14 कहता है कि हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया जाता है:

> हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो, चाहिए कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ, जिस के लिए उस ने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो।

परमेश्वर ने हमें ''आदि'' से चुना, परन्तु उसने हमें पवित्र लोग होने के लिए कैसे बुलाया और चुना? पवित्र आत्मा ने हमें विश्वास को बढ़ाने का अवसर दिया (रोमियों 10:17)। वह विश्वास सुसमाचार को सुनने के द्वारा आता है; इसे किसी और ढंग से नहीं पाया जा सकता।

जोसेफ़स ने रोमियों के आक्रमण की एक अनोखी बात लिखी। सेनापति सेसटियुस गैलस की निगरानी में यरूशलेम सेनाओं की पकड़ में था, परन्तु फिर ''संसार में बिना किसी कारण'' निकल गई।[55] यह वापसी चेलों की प्रार्थनाओं का उत्तर हो सकता है (देखें 13:18)।

रोमी लोग जब वापस आए तो नगर यहूदियों से भरा हुआ था जो फसह मनाने के लिए वहां पर थे। लगभग उसी समय भोजन की कमी होने लगी। कुछ लोगों को रोमियों ने विद्रोह करने के कारण मार डाला। जोसेफ़स ने दावा किया कि ''ऐसी विपत्ति किसी और नगर पर कभी'' नहीं आई।[56]

कइयों का मानना था कि परमेश्वर ने यहूदियों को उसके मसीहा को नकारने के परिणामस्वरूप उन पर इतना बड़ा क्लेश आने दिया। घेराबंदी हुए नगर की सबसे बड़ी समस्या यहूदियों के अपने बीच की फूट थी। जोसेफ़स ने उस काल के दौरान ''तीन विश्वासघाती गुटों'' और ''चारों ओर के युद्ध'' की, बात की जो इस आक्रमण का कारण बना।[57]

टाइटस का झुकाव रहम करने के प्रति था और यहूदियों के प्रति दयालु था। एक यहूदिन बरनीके के साथ जो हेरोदेस अग्रिप्पा की बहन थी, उसका अच्छा सम्बन्ध था। उसकी कोमलता

नगर के बहुत से अगुओं की ज़िद और उसके सिपाहियों की कड़वाहट के कारण काम में नहीं आ सकी, जो कई बार आदेश को नहीं मानते। यहूदियों में कट्टरपंथियों का दबदबा था, जो दलील देते थे कि मामला परमेश्वर के हाथों में है, और उन्हें यकीन था कि वह रोमियों की ओर नहीं बल्कि उनकी ओर है। और इस कारण जीत उन्हीं की होगी।

झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता (13:21–23)[58]

[21]"उस समय यदि कोई तुम से कहे, 'देखो, मसीह यहाँ है,' या 'देखो, वहाँ है,' तो प्रतीति न करना; [22]क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और चिह्न और अद्भुत काम दिखाएँगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। [23]पर तुम चौकस रहो; देखो, मैं ने तुम्हें सब बातें पहले ही से बता दी हैं।"

आयत 21. यीशु ने उन्हें चेतावनी दी, "**उस समय यदि कोई तुम से कहे, 'देखो, मसीह यहाँ है,' या 'देखो, वहाँ है,' तो प्रतीति न करना।**" "उस समय" (τότε, *tote*) का अनुवाद NKJV में इस आयत में पहले शब्द "तब" किया गया है; NIV में इसका अर्थ "उस समय" लिया गया है। यह इस आयत को पिछली घटनाओं के साथ जोड़ देता है। समय के हिसाब से झूठे भविष्यद्वक्ताओं का पहले का संदर्भ (13:6) अनिश्चित था, परन्तु यहां पर यह संकेत है कि कुछ लोगों ने यरूशलेम से भागने के लिए समय से बिल्कुल पहले प्रकट हो जाना था।

आयत 22. यीशु ने अपने चेलों को समझाया, "**झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे।**" जोसेफ़स के लेखों में ऐसे झूठे भविष्यद्वक्ताओं का कोई उल्लेख न होना आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि उसने कलीसिया के बारे में लगभग कोई बात नहीं की। उसने तबाही करने वाले कई विद्रोहियों की बात अवश्य की। उसने यीशु मसीह "और उसके नाम से बुलाए जाने वाले मसीहियों के वर्ग" का थोड़ा सा भाग शामिल किया।[59] उन लोगों में से जिनका उसने "यीशु" कहकर उल्लेख किया, केवल एक बार "मसीही" नाम इस्तेमाल किया यानी वे जिन्हें "उसके नाम से जाना जाता था।" जोसेफ़स ने यहूदियों के उस गुट के लिए कोई अधिक लगाव नहीं दिखाया जिसे वह मानता होगा कि खत्म हो जाएगा। "झूठे मसीह" जो यरूशलेम के विनाश में नष्ट हो गए, मसीही लोगों के लिए देर तक रहने वाला परिणाम नहीं होने थे।

विनाश से पहले "झूठे मसीहों और झूठे भविष्यद्वक्ताओं" ने **चिह्न और अद्भुत काम** दिखाने थे ताकि हो सके तो वे **चुने हुओं को भी भरमा** दें। परमेश्वर ने उन लोगों के लिए गवाही के रूप में जो एक सच्चे मसीह में विश्वास नहीं करना चाहते थे, "अद्‌भुत काम" होने दिए हो सकते हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 2:10–12 हमें चौंकाने वाली बात बताता है कि यदि कोई सच्चाई पर विश्वास नहीं करता तो परमेश्वर "एक भटका देने वाली सामर्थ को भेजेगा कि वह झूठ की प्रतीति करे।" कोई इस विचार को चुनौती दे सकता है कि परमेश्वर सचमुच में किसी का मन कैसे कठोर कर सकता है। इसका उत्तर यही है कि सच्चाई या तो विनम्र बना देती है या कठोर कर देती है। यदि हम सच्चाई से प्रेम करते और इसे मानते हैं तो यह बचा लेगी; यदि हम सच्चाई को नज़रअंदाज़ करते या नकारते हैं तो हम अपने आपको धोखे में फंसने के लिए

कमज़ोर कर लेते हैं।

"झूठे मसीहों" या "झूठे भविष्यद्वक्ताओं" की ओर से होने वाला कोई भी "चिह्न" या "अद्भुत काम" घटिया दर्जे का ही होगा, जिसमें ऐसा कोई गुण नहीं होगा जो यह सुझाव देता हो कि यह परमेश्वर की ओर से है। ईसवी सन के आरम्भिक काल में ऐसे कई लोग सामने आए। ऐसी घटनाओं के दावों को मसीह और प्रेरितों द्वारा किए जाने वाले आश्चर्यकर्मों से सावधानी से मिलाने वाला व्यक्ति अंतर को आसानी से देख सकता था और उसने उन पर यकीन नहीं करना था (13:22, 23)। प्रेरितों 8 में शमौन जादूगर ने बहुत से लोगों को भरमाया था; और प्रेरितों 13:6-12 में अच्छा भला समझदार व्यक्ति हाकिम सिरगियुस पौलुस बार-यीशु (या इलीमास) के चिह्नों से लगभग प्रभावित हो ही गया था।

हम जानते हैं कि "न्याय के दिन" बहुत से लोग दावा करेंगे कि उन्होंने उसके नाम से चमत्कारी चिह्न दिखाए। यीशु को इन्हें यह कहना पड़ेगा, "मैंने तुमको कभी नहीं जाना" (मत्ती 7:21-23)। इस प्रकार से भरमाए कुछ लोग शायद यरूशलेम के विनाश के समय जीवित थे। वे भरमाए गए हो सकते हैं जिस कारण "यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ" देखकर (लूका 21:20) वे नगर से गए नहीं और यह उनके विनाश का कारण बना।

आयत 23. यीशु ने अपने चेलों को समझाया, "**तुम चौकस रहो; ... मैं ने तुम्हें सब बातें पहले ही से बता दी हैं।**" वह नहीं चाहता था कि वे कपटपूर्ण चिह्नों से भ्रमित हों। यरूशलेम का विनाश होने के समय उसने परमेश्वर के दाहिने हाथ होना था। परमेश्वर ने प्राचीन इस्राएल को दण्ड देने के लिए अन्य जातियों का इस्तेमाल किया; उनके पवित्र नगर के विनाश के समय पर वह स्वयं नहीं गया।

अपने चेलों को सम्बोधित करते हुए, यीशु ने कहा, "देखो मैंने तुम्हें *सब बातें* पहले ही बता दी हैं।" वह उन्हें चालीस से भी कम वर्षों के अंदर-अंदर आने वाली खतरनाक घटनाओं से बचने के लिए, जो कुछ उन्हें जानना आवश्यक था, वह सब बता रहा था। इसी प्रकार से उसने हमें संसार की विनाशकारी शक्तियों से बचने के लिए, जो कुछ हमें जानना आवश्यक है, नये नियम के द्वारा बता दिया है। 2 पतरस 1:2, 3 में पतरस के कहने का यही अर्थ था, जब उसने कहा, "उसकी ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है।" यहूदा ने मसीही लोगों को समझाया, "उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था" (यहूदा 3)। विश्वास का केवल एक "सिस्टम" है जो बचा सकता है। जब इसमें मिलावट कर दी जाती है या इसे बदल दिया जाता है तो यह उद्धार के बजाय दण्ड का कारण बन जाती है। बहुत से लोग "उस विश्वास के लिए पूरा यत्न" करने में नाकाम हैं।

"उन दिनों में" (13:24-27)[60]

24"उन दिनों में, उस क्लेश के बाद सूरज अन्धेरा हो जाएगा, और चाँद प्रकाश न देगा; 25और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे; और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी। 26तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे।

[27]उस समय वह अपने दूतों को भेजकर, पृथ्वी के इस छोर से आकाश के उस छोर तक, चारों दिशाओं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा।''

आयतें 24, 25. क्या इस वचन की कोई व्याख्या है जो **उन दिनों में, उस क्लेश के बाद** से मेल खाती हो (13:24)? हमारे युग के अंत में इस काल्पनिक ''बड़े क्लेश'' के बाद किसी कथित समय के साथ ज़बर्दस्ती मिलाना वचन का दुरुपयोग है, जिसकी शिक्षा न तो मरकुस 13 में है और न सुसमाचार के किसी और विवरण में। यह वचन द्वितीय आगमन के संदर्भ जैसा लगता है, परन्तु इसका एक और अर्थ बिल्कुल सम्भव है। यदि कोई पुराने नियम के नबियों की भाषा की समझ रखता हो तो यहां इस्तेमाल हुई भाषा के लिए यह उपयुक्त है।

पवित्र शास्त्र में कई ''आनों'' का संकेत है। यह मत्ती 24 और लूका 21 के समानांतर वचनों की समीक्षा के लिए सहायक है। उदाहरण के लिए, मत्ती 24:29 में ''उन दिनों के क्लेश के तुरन्त बाद'' है। यदि पिछली आयतें 70 ई. में यरूशलेम के विनाश पर लागू होती हैं तो इस वचन में बताई गई घटनाएं उस सामान्य समय की बात करती हो सकती हैं, न कि संसार के अंत की। अच्छे प्रमाण के रूप में इस बात का संकेत मिलता है कि संदर्भ यरूशलेम के विनाश का ही है, इसलिए मत्ती 24:29 में ''तुरन्त'' और ''उन दिनों'' शब्द हम से मांग करते हैं कि हम 24:27 वाले ''आना'' पर एक आत्मिक यानी अपोकल्पिटिक अर्थ में विचार करें।

ऐल्बर्ट बार्नस ने निष्कर्ष निकाला कि यह लोगों के बीच ''बड़े कोलाहल और कष्ट'' का संकेत देता हुआ प्रतीक होता है।[61] इन अभिव्यक्तियों को शाब्दिक बना देना बड़ी कठिनाई उत्पन्न करता है और मत्ती 24:29 में ''तुरन्त'' और ''उन दिनों'' के अर्थ को मरोड़ देता है। यदि यह भाषा यरूशलेम के विनाश पर लागू होती है, तो पुराने नियम के नबियों की तरह, यह इस शब्दावली को सांकेतिक बना देती है।

यह विचार सम्भव हो सकता है। यी पढ़कर कि **सूरज अन्धेरा हो जाएगा, और चाँद प्रकाश न देगा** (13:24), पुराने नियम की शब्दावली से परिचित लोगों को यशायाह 13:10 जैसे वचन याद आ जाएंगे, जहां एक बड़ी विश्वशक्ति के रूप में बेबीलोन का अंत ऐसे ही शब्दों में मिलता है।

> क्योंकि आकाश के तारागण और बड़े बड़े नक्षत्र अपना प्रकाश न देंगे, और सूर्य उदय होते होते अन्धेरा हो जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा।

पुराने समय के नबियों द्वारा किसी नगर या देश के विनाश का कारण बनने वाली परमेश्वर की कार्यवाही के वर्णन के लिए ''आकाश के तारागण ... अपना प्रकाश न देंगे,'' ''सूर्य अंधेरा हो जाएगा'' और ''चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा'' जैसे रंगीन वाक्यांशों का इस्तेमाल किया जाता था। यशायाह 34:4, 5 में एदोम के अंत के लिए ऐसी ही भाषा मिलती है। अन्य वचनों में, जैसे यशायाह 24:19-23, उस दण्ड के लिए जो उस समय इस्राएल पर आने वाला था, ऐसे ही शब्दावली का इस्तेमाल किया गया। मरकुस 13:25 में **अकाश के तारागण गिरने लगेंगे** वैसा ही रूपक है जैसा यशायाह 13:10-13 में जातियों के विनाश की भविष्यद्वाणी में इस्तेमाल किया गया। लूका 21:25, 26 में यरूशलेम के विनाश के रंगीन रूपक के भाग के रूप में समुद्र और लहरों के गर्जने की एक टिप्पणी है। विनाश इतना बड़ा होगा कि **आकाश की शक्तियां**

हिलाई जाएंगी (13:25)।

मैक्गार्वे को उपदेश के इस भाग को यरूशलेम के विनाश को आत्मिक रूप में मानने से संकोच था। वह इस वचन को द्वितीय आगमन के सम्बन्ध में जोड़ा गया मानता था। मत्ती 24:29 में "तुरन्त बाद" को वह इस व्याख्या के सम्बन्ध में दी गई सबसे बड़ी कठिनाई मानता था। वह मानता था कि "तुरन्त" को समय को घटाने के रूप में यानी समय को ऐसा देखा जाए जैसे परमेश्वर उसे देखता है।[62] दूसरे शब्दों में संसार की आत्मिक इतिहास में यरूशलेम के विनाश के बाद की अगली बड़ी घटना समय का अंत होना था। इस कारण मत्ती 24:29 में "उन दिनों के क्लेश के तुरन्त बाद" के समय के साथ मरकुस 13:24 वाले "उन दिनों" को मिलाना समय के अंत की बात करता होगा।

आयतें 26, 27. इस वचन में अगला चुनौतीपूर्ण विचार **मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ बादलों में आते** देखना है। मत्ती 24:30 में इसे "मनुष्य के पुत्र का चिह्न" कहा गया है। यीशु की भविष्यद्वाणियों के पूरा होने में, यरूशलेम के विनाश ने स्पष्ट प्रमाण या चिह्न का काम करना था, कि वह एक दिन निजी तौर पर भी आएगा। नबियों के लेखों में, प्रभु के तब आने की बात कही गई थी जब वह बड़ी विपत्ति के द्वारा अपने लोगों पर दण्ड ला रहा था (देखें आमोस 4:12)।

बार्नस ने लिखा, "यरूशलेम के विनाश के समय उसके आने का *चिह्न* या *प्रमाण* इन भविष्यद्वाणियों के पूरा होने में दिखाई दिया।"[63] नगर का विनाश और चेलों का बच जाना दोनों ही प्रभु के स्वर्गदूतों के द्वारा प्रतीकात्मक रूप में आने और उसके आत्मा के बहाए जाने से पूरा हुआ। इसमें दण्ड के माध्यमों के रूप में उसका लोगों और जातियों को इस्तेमाल करना शामिल हो सकता है। न विश्वास करने वाले यहूदियों को नष्ट कर देने वाले मिश्रण के विश्वासियों को बचाना अपने पवित्र लोगों पर हमारे प्रभु की रक्षात्मक शक्ति का चिह्न था।

यरूशलेम का विनाश यहूदियों के लिए इस बात की पुष्टि होना था कि "मनुष्य का पुत्र" उनके बीच में था। यदि वे यीशु की आज्ञा के अनुसार करने से इनकार करते तो नगर के नष्ट होने के समय उन्होंने नष्ट हो जाना था या दासता में ले जाए जाना था।

मनुष्य के पुत्र के आने को मत्ती 16:28 और मरकुस 9:1 में भी दिखाया गया है। ये आयतें यीशु के अपना राज्य स्थापित करने के समय उसके द्वितीय आगमन की बात नहीं करती, बल्कि आत्मा के आने की बात करती हैं। मरकुस 13:30 की तुरन्तता के कारण हमें इस विचार को मानना पड़ेगा, जो कहता है कि "ये सब बातें" उस पीढ़ी के लोगों में घटनी थीं जो यीशु को सुन रहे थे।

वह अपने दूतों को भेजकर (13:27)। इसलिए "दूतों" शब्द का अर्थ स्वर्गदूतों की हमारी सामान्य समझ से अलग हो सकता है। पवित्र शास्त्र में "दूतों" के लिए (ἄγγελος, *angelos*, "स्वर्गदूत") शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर हुआ है। मत्ती 11:10 में जहां यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को "दूत" कहा गया है वहीं "स्वर्गदूत" के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है। मरकुस 1:2 और लूका 7:24, 27; 9:52 में इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है।

यहां इस्तेमाल हुए शब्द "दूतों" का अर्थ केवल इतना हो सकता है कि परमेश्वर अपने प्रचारकों को दूतों के रूप में भेज रहा था, जिन्होंने यहूदियों पर भयानक कष्ट आने पर उद्धार

पाए हुओं को बचा लेना था। **पृथ्वी के इस छोर से आकाश के उस छोर तक, चारों दिशाओं** (13:27) अभिव्यक्ति केवल उन लोगों का संकेत हो सकती है जिन्होंने उद्धार को मान लेना थाचाहे वे कहीं भी हों।

जे. मारसेलस किक ने दिखाया कि तुरही की आवाज जुबली वर्ष (देखें मत्ती 24:31) से मनुष्यजाति को छुड़ाने के लिए सुसमाचार के आने का पूर्वाभास था (व्यव. 30:4; भजन 22:27; यशायाह 45:22)।[64] यरूशलेम और मन्दिर के विनाश ने एक युग के अंत का संकेत और अपनी परिपूर्णता में एक नई जाति का उदय हुआ, जो संसार की सब जातियो में से चुने हुए लोगों से बने एक नए इस्राएल का आरम्भ था। "उद्धार का संदेश अब केवल यहूदियों तक सीमित नहीं था। इसके बाद से चुने हुओं ने चारों दिशाओं यानी आकाश के एक से दूसरे सिरे से सब लोगों ने इकट्ठा होना था।"[65]

मत्ती 24:30 में "पृथ्वी के सब कुलों के लोग" "पृथ्वी के इस छोर से अकाश के उस छोर तक ... चुने हुए लोगों" के साथ मेल खाती अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा हो सकती है (मरकुस 13:27; KJV)। "कुलों" (φυλή, *phulē*) सब जातियों के बजाय संसार में बिखरे हुए सब यहूदी हो सकते हैं। लूका 21:28 में "कुलों" और "पृथ्वी" का कोई उल्लेख नहीं है जबकि "छुटकारा निकट" होने की बात है। यह उन्हें पेश किए जाने वाले उद्धार का संकेत होगा जिन्होंने मन्दिर और यरूशलेम के प्रति निष्ठा त्यागकर मसीह के पीछे चलना था।

आयत 27 **अपने चुने हुए लोगों** की बात करती है, जबकि लूका 21:35 में "सारी पृथ्वी के सब रहने वालों" की बात है। "जातियां" ἔθνος (*ethnos*) का अनुवाद है और आम तौर पर यह अन्यजातियों के संदर्भ में होता है (देखें मत्ती 28:19)। जब "मनुष्य के पुत्र को अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा" (मरकुस 13:26, 27), तो वह उन सब लोगों को इकट्ठा करेगा जिन्होंने उसके पीछे चलना चुना है।

अंजीर के पेड़ का दृष्टांत (13:28–31)[66]

28"अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखोः जब उसकी डाली कोमल हो जाती, और पत्ते निकलने लगते हैं; तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है। 29इसी प्रकार जब तुम इन बातों को होते देखो, तो जान लो कि वह निकट है वरन् द्वार ही पर है। 30मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक ये लोग जाते न रहेंगे। 31आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।"

आयतें 28, 29. कुछ लोग **अंजीर के पेड़ से दृष्टांत** का अर्थ यह निकालते हैं कि इस बात के संकेत होंगे कि मनुष्य का पुत्र फिर से आने वाला है। उनका मानना है कि जैसे अंजीर के पेड़ों पर पत्ते आने पर लोगों को पता चल जाता था कि ग्रीष्मकाल आने वाला है, वैसे ही उसके आने का समय बताया जा सकता है। यीशु ने कहा, "**जब उसकी डाली कोमल हो जाती, और पत्ते निकलने लगते हैं; तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है।**" इस्राएल में अंजीर के पेड़ पर पत्ते तब तक नहीं आते जब तक गर्मी का मौसम न आने वाला हो। इसलिए पत्तों से यह पक्का पता चल जाता था कि ग्रीष्मकाल आने वाला है।

यदि यह विचार सही था तो इसका अर्थ इस प्रकार से बताने में सही होताः

> जब तुम सूर्य को अंधकार हुए, चांद को रौशन न देते हुए, तारों को गिरते हुए, आकाश की शक्तियों को हिलाए जाते हुए, आकाश में मनुष्य के पुत्र के चिह्न गोत्रों के शोक करने, मनुष्य के पुत्र के बादलो में आने, तुरही की आवाज़, चुने हुओं के अंतिम इकट्ठ को देखें: जब तुम ये सब बातें देखो, तो जान लेना कि निकट बल्कि द्वार पर ही है।[67]

परन्तु किक ने इस अनुवाद पर यह कहते हुए आगे टिप्पणी की, ''यह अर्थ कितना मूर्खतापूर्ण और बेतुका है!''[68]

क्या हम मसीह के अपने चेलों को यह कहने की कल्पना कर सकते हैं कि ''जब तुम तारों को गिरते हुए देखो, तो यह इस बात का चिह्न होगा कि अंत निकट है''? वास्तव में यदि यह सब कुछ होता तो किसी चेतावनी की कोई आवश्यकता ही नहीं होनी थी। अंतिम घटनाएं तो पहले ही चल रही होनी थीं और चेतावनी का ''चिह्न'' आने में देर हो चुकी होनी थी। किक ने आगे कहा, ''यदि [मत्ती] 24:4-28 की सभी घटाएं हो गईं और आयतें 29-31 अक्षरशः पूरी हो गईं, तो द्वितीय आगमन, पहले ही हो चुका होना था!''[69] यह विचार अंजीर के पेड़ के दृष्टांत को व्यर्थ बना देगा।

''चिह्न'' या ''अंजीर के पेड़ से दृष्टांत'' यरूशलेम के विनाश के बारे में ही होगा, क्योंकि 13:32 की कुल मिलाकर पूरी शिक्षा यह है कि जिस समय यीशु बात कर रहा था, उस समय स्वर्ग में पिता को छोड़ और किसी को उसके द्वितीय आगमन के समय का पता नहीं था। कोई चिह्न नहीं होगा, क्योंकि ''प्रभु का दिन'' वैसे ही अचानक आएगा ''जैसा रात को चोर आता है'' (1 थिस्स. 5:2; देखें मत्ती 24:36-39)।

यह ''अंजीर का पेड़'' मरकुस 11:13, 14 और 11:20, 21 में बताए गए पेड़ का ध्यान दिलाता है जो इस्राएल और उस जाति के परमेश्वर के अनुग्रह से गिरने को दिखाता था। यहूदी मन्दिर के विनाश से अन्यजाति जगत के लिए मसीह के राज्य के खुलने की बात साफ़ हो गई। इसके अलावा मन्दिर के न होने ने यहूदी मसीहियों को यहूदी मत में वापस मुड़ने से रोका। यहूदी लोग चाहे अपने मन्दिर पर अपनी शान समझते थे, परन्तु अब उन्हें भविष्य में मसीह की बातों पर ध्यान देना आवश्यक था।

दृष्टांत की यीशु की प्रासंगिकता 13:29 में दी गई है: ''**इसी प्रकार जब तुम इन बातों को होते देखो, तो जान लो कि वह निकट है वरन् द्वार ही पर है।**'' चिह्नों के पूरा हो जाने पर, यीशु की बातों पर भरोसा करने वालों को पता चल जाना था कि नगर का अंत निकट है और उन्होंने भाग जाना था।

''वह निकट है'' (ἐγγύς ἐστιν, *engus estin*) वाक्यांश का अनुवाद कैसे होना चाहिए? वाक्यांश का कर्त्ता ''यह'' ("it") है या ''वह'' ("he")? NIV, KJV, और NKJV यह ("it") है जबकि NASB, NRSV, और ASV में ''वह'' ("He" या "he") है।

मूल पवित्र शास्त्र में कोई विशेष संज्ञा नहीं दी गई, इस कारण पूर्वपद तय करने की बात व्याख्या करने वाले पर छोड़ दी जाती है। NASB में "He" बड़े अक्षरों में किया गया है जो इस बात का संकेत देता है कि "He" यीशु को कहा गया है, जबकि 13:30 इस व्याख्या का समर्थन

करता है कि "it" सही है, जो ''इस पीढ़ी'' का अर्थ देता है। परन्तु सम्भावना बनी रहती है कि यह "He" उस कार्य के जो होने वाला था, व्यक्ति को दिखाता है। अन्य शब्दों में, ''वह'' ("He") का अर्थ प्रभु हो सकता है, जो यहूदियों को दण्ड देने ''आ रहा'' था।

आयत 30. यीशु ने उन्हें आश्वस्त किया कि **जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक ये लोग जाते न रहेंगे**। ''लोग'' के लिए γενεά (*genea*) शब्द का अर्थ ''पीढ़ी'' शब्द है। ''पीढ़ी'' का क्या अर्थ है? मत्ती 1:17 में ''चौदह पीढ़ियों'' की बात है जो यीशु की वंशावली की पीढ़ियों को दर्शाता है। मरकुस 13:30 के शब्द का अर्थ वे लोग हो जो उस समय यीशु के सामने थे, या वह पीढ़ी जो उस समय रह रही थी (देखें 8:38)।

विलियम हैंड्रिक्सन ने ''ये लोग'' का अर्थ ''यहूदी लोग ...'' बताया।[70] मैक्गार्वे ने सही टिप्पणी की कि यह यह कहने का कि जब तक ये सब बातें उनके साथ हो नहीं जातीं तब तक यहूदी कौम ने खत्म नहीं होना था ''केवल सामान्य सत्य'' होना था।[71] यह स्पष्ट होना चाहिए कि ''ये लोग'' या यह पीढ़ी उस समय रह रहे लोगों को कहा गया जिनसे यीशु बात कर रहा था। भविष्यद्वाणी में उन घटनाओं को पहले से बता दिया गया जो बहुत दूर नहीं थीं, और यीशु के समय के लोगों ने उन्हें अनुभव करना था। ''ये लोग'' का अर्थ संसार के अंत में रहने वाले लोग नहीं हो सकता।

आयत 31. सुसमाचार का मरकुस का विवरण लिखने के बड़े कारणों में से एक कारण साफ़-साफ़ यह दिखाना था कि पुराना सिस्टम खत्म हो रहा था (देखें इब्रा. 8:13)। मत्ती 24:4-35 यरूशलेम के विनाश की बात करता है, जबकि मरकुस 13:31 में यीशु ने घोषणा की, ''**आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।**'' मत्ती 24:30 बादलों में मनुष्य के पुत्र के ''चिह्न'' की बात करता है। यह इस बात का चिह्न है कि यरूशलेम का विनाश वास्तव में प्रभु की ओर से था। बेशक, परमेश्वर ने रोमी सिपाहियों के हाथों से इस विनाश को पूरा किया। सूर्य, चांद और तारों के अपने प्रकाश देने से इनकार करना प्रभु की सामर्थ और महिमा की घोषणा का प्रतीकात्मक ढंग होना था।

यीशु का अंतिम बार प्रकट होना, उसका सबके देखते वापस आना, कोई चिह्न नहीं होगा, क्योंकि यह तो उसके तेज का मुख्य प्रदर्शन होगा। मरकुस 13:33-37 और मत्ती 24:36-25:46 मसीह के द्वितीय आगमन की बात करते हैं। तब संसार और संसार के समय का अंत हो जाएगा। समय के इस अंत के लिए कोई चिह्न नहीं दिया गया है। मरकुस 13:30 यह पुष्टि करता है कि उस समय रह रहे लोगों ने यरूशलेम के विनाश के चिह्नों को देखना था। यीशु द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द ''ये लोग'' या यह पीढ़ी का अर्थ हमेशा ही उसके समय में संसार में रह रहे लोग होता है।

यीशु की वापसी और एक अंतिम उपदेश (13:32-37)[72]

13:1-31 में दी गई यीशु की शिक्षाएं बिल्कुल स्पष्ट हैं। 13:32-37 वाली शिक्षाएं अधिक सामान्य हैं।[73] पहले भाग में उसने बहुत से चिह्न बताए। दूसरे भाग में उसने कोई पक्का चिह्न नहीं दिया। इस भाग में पहले उसने अपने चेलों को यरूशलेम से भाग जाने को कहा; बाद वाली घटना में भागने का समय नहीं होना था। पृथ्वी के एक प्रकार के न्याय को यरूशलेम के सम्बन्ध में देखा जाता है, परन्तु 13:32 के आरम्भ से यीशु अनन्त न्याय की बात कर रहा था[74] (देखें मत्ती 24)।

नूह के समय में जीवन सामान्य की तरह ही चल रहा था, और अचानक प्रलय आई। यही बात प्रभु के आने पर होगी। प्रभु के वापसी के समय पहाड़ों पर भाग जाने की कोई सम्भावना नहीं होगी।

द्वितीय आगमन में, सब ''पवित्र लोगों'' (सब मसीही) को जो जीवित होंगे, अचानक बादलों में प्रभु के पास उठा लिया जाएगा (1 थिस्स. 4:17)। मसीह की वापसी को रात में चोर के आने से मिलाया गया है, क्योंकि कोई नहीं जानता कि यीशु कब आएगा (मत्ती 24:43; 1 थिस्स. 5:2; 2 पतरस 3:10)। शारीरिक देह से आत्मिक देहों में बदलने का काम ''पलक मारते ही'' होने वाला है (1 कुरि. 15:51, 52)। इस प्रतीक का इस्तेमाल आकस्मिकता, तात्कालिकता और अचानक होने पर ज़ोर देने के लिए किया गया है।

यीशु की वापसी (13:32, 33)

32''उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता। 33देखो, जागते और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा।''

आयत 32. जब यीशु ने मनुष्य का रूप धारण किया तो उसने अपने आपको सीमित कर लिया। इस आयत से हमें पता चलता है कि कम से कम उसकी जानकारी सीमित थी। अपनी वापसी के सही सही समय के सम्बन्ध में, उसने कहा, **''उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता।''** यदि यीशु को पृथ्वी पर रहने के समय यह पता नहीं था कि वह दोबारा कब आएगा, तो कोई भी मनुष्य भविष्यद्वाणी से उसके वापस आने का समय नहीं बता सकता। यह स्पष्ट है कि भविष्यद्वाणी हमें इस तथ्य को बताने के लिए नहीं लिखी गई थी, और ''हमारे लिए उन बातों की जांच पड़ताल करना, जिनके न पता होने की हमारे प्रभु ने मानी, परमेश्वर की निंदा से कम नहीं है।''[75] इसलिए उसके आने का समय तय करने का हर प्रयास बेकार साबित हो चुका है। सारा अधिकार मिल जाने के बाद (मत्ती 28:18), बेशक यीशु को अब वह पता है।

मरकुस 13:32 बड़े अंतर को दिखाता है, जैसा कि आरम्भिक शब्द (NASB में भी) **परन्तु** से संकेत मिलता है। यह उसमें जो यरूशलेम के विनाश के विषय में तय हो सकता था और जो द्वितीय आगमन के बारे में पता नहीं हो सकता, स्पष्ट अंतर को दिखाता है। यरूशलेम के विनाश के सही सही **दिन या घड़ी** बहुत पहले स्पष्ट नहीं होनी थी। द्वितीय आगमन के बारे में भी हम इससे भी कम पुष्टि कर सकते हैं, क्योंकि हमारे प्रभु ने अपने आगमन के समय का संकेत देने के लिए कोई चिह्न नहीं दिया।

मरकुस 13:28–32 को इस प्रकार से लिखा जा सकता है: ''अंजीर के पेड़ की कोंपले आना ग्रीष्मकाल के निकट होने का संकेत वैसे ही है जैसे चिह्नों से यरूशलेम के पक्के विनाश का संकेत मिलता है, परन्तु द्वितीय आगमन के समय को कोई नहीं बता सकता कि कब होगी!''

आयत 33. मसीही लोगों के लिए भक्तिपूर्ण जीवन जीते रहना आवश्यक है क्योंकि हमें यीशु के आने का समय नहीं बताया गया है। हम **नहीं जानते कि वह समय कब आएगा।**

यीशु ने समझाया, "**देखो, जागते और प्रार्थना करते रहो।**" NIV में है, "खबरदार! चौकस रहो!" JB में कहा गया है, "खबरदार रहो, जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आ जाए।"

यीशु ने अपने सुनने वालों को समझाया, "इसलिये सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार, और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाएं, और वह दिन तुम पर फन्दे के समान अचानक आ पड़े" (लूका 21:34)। बहुत से लोगों के मन इस प्रकार से "सुस्त हो" जाते हैं क्योंकि उन्हें प्रभु की वापसी का कोई विश्वास नहीं है। विलियम बार्कले ने इस स्थिति का सही विचार दिया है:

> हम अनन्तकाल की परछाई में रहते हैं। भयभीत या उनमाद भरी उम्मीद का कोई कारण नहीं है। परन्तु इसका अर्थ यह अवश्य है कि दिन प्रतिदिन हमारा काम पूरा और खत्म होना आवश्यक है। इसका अर्थ यह अवश्य है कि हमारा जीवन ऐसा हो कि वह कब आता है, हमें इससे कोई फर्क न पड़े। यह हमें उसे देखने और किसी भी क्षण उससे मिलने को तैयार रहने के लिए हर दिन को अनुकूल बनाने के लिए जीवन में बड़ा काम दे देता है। पूरा जीवन ही राजा से भेंट करने के लिए तैयारी बन जाता है।[76]

द्वितीय आगमन के चिह्नों की चेतावनी के बिना, हमें लोगों से समय में साधारण काम करने की उम्मीद होनी थी, और वे कर रहे होंगे। मत्ती 24:36-44 में उन साधारण गतिविधियों की बात बताई गई है जो मसीह के आने के समय लोग कर रहे होंगे:

> "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें विवाह होते थे। और जब तक जल-प्रलय आकर उन सबको बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी। इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा तो जागता रहता, और अपने घर में सेंध लगने न देता। इसलिये तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।"

हम में से हर किसी के लिए यह प्रश्न है कि "क्या मैं उससे मिलने के लिए तैयार हूं?" परमेश्वर को भूल जाना और इस संसार की बातों में खो जाना, सबसे बड़ी मूर्खता का काम है, जो कोई कर सकता है। यदि हम अंत तक उसे ध्यान में रखें तो इससे हमारे अंदर डर नहीं बल्कि वह उम्मीद बनी रहेगी कि हमें "धर्म का मुकुट" मिलेगा (2 तीमु. 4:8)।

चौकस रहने की उसकी अंतिम चेतावनी (13:34–37)

34"यह उस मनुष्य की सी दशा है, जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाए, और अपने दासों को अधिकार दे: और हर एक को उसका काम बता दे, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दे। 35इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, साँझ को या आधी रात को, या मुर्ग़ के बाँग देने के समय या भोर को। 36ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए। 37और जो मैं तुम से कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ: जागते रहो!"

आयतें 34, 35. यीशु के उदाहरण में, स्वामी के अचानक लौट आने की दशा में **द्वारपाल को** हर समय **जागते रहने की आज्ञा** थी। निश्चित रूप में **परदेश** जाने वाला **मनुष्य** यीशु ही है क्योंकि वह स्वर्ग में गया हुआ है और एक दिन वापस आएगा। जाने से पहले उसने **अपने दासों को अधिकार** दिया और **हर एक को उसका काम बता** दिया है। मसीह के हर सेवक को स्वामी के लौटने पर उस काम में, जो उसे मिला है, लगे होना चाहिए। यीशु ने कहा कि दासों को यह पता नहीं था कि **स्वामी कब आएगा साँझ को या आधी रात को, या मुर्ग़ के बाँग देने के समय या भोर को** आएगा (13:35)। हमारे लिए इसका अर्थ यह है कि हमारा प्रभु किसी भी समय में यानी हमारे बचपन में, युवा होने पर या बुढ़ापे में, कभी भी आ सकता है। हमें उसके काम में हर समय लगे रहना चाहिए।

आयत 36. यीशु ने कहा कि हो सकता था कि घर का स्वामी **अचानक आकर** [उन्हें] **सोते हुए पाए**। यदि वह हमें सोते हुए पाए यानी वह न करते हुए पाए जो हमें करना चाहिए तो यह बहुत बुरी बात होगी। हमारा प्रभु अचानक आ सकता है, इसलिए हम ऐसा न होने दें कि वह हमें सोते हुए और बिना तैयारी के पाए। प्रभु की वापसी का आरम्भिक मसीहियों की चिंता हमारी चिंता से कहीं अधिक प्रतीत होती है, परन्तु फिर भी हम उनसे इसके अधिक निकट रहते हैं। अनिश्चितता के इस समय में, हमें कम से कम यीशु के आकर, हमें स्वर्ग में अपने साथ ले जाने की उतनी ही इच्छा होनी आवश्यक है।

आयत 37. सब लोगों से **जागते रहो** कहते हुए यीशु ने उससे जो उसने अपने समय के अनुयायियों को पहले ही बता दिया था और हमारे लिए दिए जाने वाले संदेश में अंतर किया। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि चिह्नों के बारे में जो कुछ वह उन्हें पहले ही बता चुका था, वह पहली सदी के यहूदी मसीहियों के लिए था जबकि "जागते रहो" का निर्देश हर युग के लोगों के मानने के लिए है। हम हर समय चौकस रहें, परन्तु इतने उतावले न हों कि यीशु के द्वितीय आगमन की तिथि की भविष्यद्वाणी करने की किसी की मूर्खतापूर्ण बातों में आ जाएं।

जितना हम जानते हैं, युग के अंत की तिथि गुप्त है और उसका केवल परमेश्वर को पता है। हमारा प्रभु चाहता है कि हम अपने परिवारों की देखभाल, वचन को सिखाने और प्रतिदिन के काम करते रहने की अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करते रहें। कुछ थिस्सलुनीकियों को लगा था कि प्रभु इतनी जल्दी आ रहा है कि उन्होंने काम करना छोड़ दिया (2 थिस्स. 2)। पौलुस ने ऐसे व्यक्ति को "अलग रहने" को कहा (2 थिस्स. 3:6)। चौकस रहने का अर्थ यह नहीं है कि हम दिन भर बादलों की ओर देखते रहें। इसका अर्थ प्रभु की प्रतिदिन की सेवा में विश्वासी

बने रहना है।

पौलुस ने इसे इस प्रकार से कहा: "जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त होओ" (1 कुरि. 16:13)। ये शब्द पलटन के किसी अधिकारी द्वारा अपने सिपाहियों को बहादुरों की तरह लड़ने को कहने जैसे हैं, यह जानते हुए कि शत्रु बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। यदि हमें यह पक्का पता हो कि अंत बहुत निकट है तो हम जीवन की साधारण बातों को छोड़ देंगे। हम नहीं जानते, इसलिए हमें अपने प्रतिदिन की गतिविधियों में बने रहना आवश्यक है; परन्तु प्रतिदिन हमें उसके आने की उम्मीद में रहना आवश्यक है।

एक आत्मिक अर्थ में, विश्वासी पवित्र जन प्रभु के आगमन को इस संसार की हर घटना में देखता है। जब भी धार्मिकता बुराई पर विजय पाती है, तो हम देखते हैं कि मसीह का आना निकट है। हम यह पक्का कह सकते हैं कि "प्रभु निकट है" (फिलिप्पियों 4:5ख), बल्कि अब भी वह हम पर नज़र रखे हुए है। द्वितीय आगमन में, सारी धार्मिकता सच्ची साबित होगी और हर गलती को सही किया जाएगा।

प्रासंगिकता

यीशु और भविष्य (13:1-4)

मरकुस 13 वाले उपदेश में, जिसे आम तौर पर "जैतून का उपदेश" कहा जाता है, यरूशलेम के विनाश और समय के अंत की हमारे प्रभु की भविष्यद्वाणियां हैं। यह प्रस्तुति सुसमाचार के सभी सहदर्शी विवरणों में अलग-अलग रूपों में मिलती है (देखें मत्ती 24:4-42; लूका 21:8-36)।

यीशु के मन्दिर के बाहरी आंगनों से निकलने पर, जहां वह 11:27 के आरम्भ वाली घटनाओं के दौरान था,[77] एक चेले ने उसका ध्यान अद्‌भुत सुन्दरता की ओर दिलाया (13:1)। इस चेले ने पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करते हुए बात की होगी, क्योंकि मत्ती 24:1 कहता है कि "उसके चेले" उसके साथ मन्दिर की शान की बातें कर रहे थे। इसकी शान की उनकी टिप्पणी से यीशु को इसके विनाश और समय के अंत की बात करने का अवसर मिल गया।

यीशु ने कहा कि मन्दिर गिरा दिया जाना था, यहां तक कि उसका "पत्थर पर पत्थर भी बचा न [रहना था] जो ढाया न जाए" (मरकुस 13:2)। निश्चित रूप में चेलों के लिए यह घोषणा चौंकाने वाली थी। उन्हें लगा होगा कि वह समय के अंत की बात कर रहा है।

बाद में जब यीशु "जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था, तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने अलग जाकर उससे पूछा, 'हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी उस समय का क्या चिह्न होगा?'" (13:3, 4; देखें मत्ती 24:3; लूका 21:7)। इस निजी बातचीत में, एक अर्थ में चेलों ने कुल चार प्रश्न पूछे। "ये बातें" पूछते हुए वे जानना चाहते थे, "मन्दिर कब गिराया जाएगा?"; "तेरे आने के चिह्न क्या होंगे?"; "संसार का अंत कब होगा?"; और "युग के अंत के चिह्न क्या हैं?" चेलों को लगा होगा कि ये सभी घटनाएं एक ही समय में हो जाएंगी और यह यीशु युग के अंत की बात कर रहा था। सुसमाचार के विवरणों में केवल मत्ती है जिसमें यीशु की वापसी का प्रश्न उसमें मिलता है जो

उसके चेलों ने उससे पूछा था।

मरकुस 13 चाहे एक कठिन अध्याय है, परन्तु यह इतना स्पष्ट है कि यीशु ने जिस पहले प्रश्न पर बात की वह मन्दिर ही है। उसने बातचीत के अंतिम भाग पर समय के अंत की बात नहीं की।

यरूशलेम के विनाश और यीशु की वापसी की इस चर्चा में सहानुभूति रखने वाली बात है। मसीह का भविष्य को पहले से बता देना केवल यही नहीं दिखाता कि कष्टदायक समय आने वाले थे, बल्कि यह भी दिखाता है कि अपने अनुयायियों के लिए यीशु का बड़ा लगाव था। उसने वर्तमान में भी और भविष्य में भी उन्हें सम्भालना था। इस बातचीत से हमें उसके बारे में और क्या बताती है ?

1. *यीशु भविष्यद्वाणी वाला मसीह है।* अपनी परीक्षाओं में और अपने रूपांतर में वह परमेश्वर के अंतिम प्रवक्ता के रूप में, एक निष्कलंक व्यक्ति के रूप में दिखाई देता है। इन तस्वीरों में जोड़ते हुए, अध्याय 13 उसे सच्चा नबी दिखाता है। यरूशलेम बारे उसने तीन तरह की भविष्यद्वाणियां कीं। उसने यरूशलेम के विनाश की स्पष्ट भविष्यद्वाणी, यरूशलेम के विनाश और द्वितीय आगमन की प्रतीकात्मक भविष्यद्वाणी और समय के अंत की सामान्य भविष्यद्वाणी दी।

जैसा कि हम देख सकते हैं, अध्याय 13 मुख्यतया भविष्यद्वाणी है। यरूशलेम के साथ जो कुछ भी होना था उसका यीशु का विवरण भविष्यद्वाणी वाला था, और जो कुछ उसने समय के अंत के बारे में कहा वह स्वाभाविक रूप में भविष्यद्वाणी बन गया। जब हम यीशु की भविष्यद्वाणी को इतिहास की अपनी सदी के नज़रिये से देखते हैं तो हम आसानी से देख सकते हैं कि यरूशलेम के विनाश की उसकी भविष्यद्वाणियां गलत नहीं थीं। जो कुछ भी उसने कहा, उसकी एक एक बात बिल्कुल वैसे ही पूरी हुई।

जैतून के उपदेश से यीशु के केवल *भविष्यद्वक्ता* होने का ही पता नहीं चलता बल्कि यह उसे *भविष्यद्वक्ता* होने की पुष्टि भी करता है जो इस संसार में अब तक का परमेश्वर का सबसे बड़ा और सबसे ईमानदार प्रतिनिधि है। उसका चरित्र, व्यक्तित्व और जीवन निष्कलंक था।

उसकी भविष्यद्वाणियों से हमें शांति मिलती है और इतिहास को वैसे ही होते देखकर हमारी आंखें खुल जाती हैं। उसके चेलों को कभी बिना निर्देश के नहीं रहने दिया गया। हम हर समय लकीर को तो नहीं देख सकते परन्तु हमें यह पता होता है कि यह लकीर कहां जा रही है। यदि हम अपने गाइड के पीछे-पीछे चलें तो सब अच्छा होगा क्योंकि हमारा गाइड ही वह लकीर है।

2. *हमारा उद्धारकर्त्ता तैयारी वाला मसीह है।* उसने अपने प्रेरितों को तैयार किया और उनके द्वारा भविष्य के लिए अपने दूसरे चेलों को। सर्वशक्तिमान मसीह भविष्य को इसके सब कष्टों और महिमा के साथ देख लेता है। वह हमें इसमें से ले जाता है और हमें उसके लिए पहले से तैयार करता है।

मरकुस 13 एक भविष्यद्वाणी के रूप में दिया गया जिसने परमेश्वर के लोगों को आने वाली बातों के लिए तैयार करना था। हमारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं है कि यरूशलेम का विनाश होने पर विश्वासी चेलों की मृत्यु हुई हो। जोसेफ़स ने कहा है कि टाइटस द्वारा यरूशलेम को नष्ट करने के समय दस लाख से अधिक यहूदी मारे गए थे।[78] यीशु के चेलों ने उन्हें बताई गई उसकी

बात को गम्भीरता से लिया, जिस कारण बहुत से चेले पेला में भागकर सुरक्षित रहे।

मसीह के जीवन को ''तैयारी'' शब्द से संक्षिप्त किया जा सकता है। उसके सार्वजनिक उपदेश का अधिकतर भाग आने वाले राज्य के नागरिकों के रूप में काम करने और उसके चले जाने के बाद काम को करते रहने के लिए उसके चेलों के प्रशिक्षण से सम्बन्धित था। यूहन्ना 13-17 यीशु को अपने प्रेरितों को उन परीक्षाओं के लिए जो उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के बीच के अंधकार भरे दिनों में उन पर आनी थीं, अपने प्रेरितों को तैयार करते हुए दिखाता है। वह अपने चेलों को कभी बिना तैयारी के नहीं रहने देता।

3. *हमारा प्रभु सुरक्षा देने वाला मसीह है।* जो संदेश यीशु ने दिया उसमें उसके चेलों को वह रक्षा प्रदान की गई जिसकी उन्हें यरूशलेम के विनाश के समय आवश्यकता होनी थी। यीशु के उपदेश का विषय वस्तु यही है कि अपने लोगों के लिए उसके पास आश्रय है। वह आश्रय पत्थर और सीमेंट का बना किला नहीं है बल्कि यह वह शरणस्थान है जो उसके वचनों और आश्वासनों से मिलता है। उसने कहा, ''आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी'' (13:31)। उसने इन प्रेरितों को बताया, ''पर तुम चौकस रहो; देखो, मैं ने तुम्हें सब बातें पहले ही से बता दी हैं'' (13:23)।

जब हम मसीह के वचनों पर चलते हैं, तो चाहे हमें हर प्रकार की कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े, परन्तु हम इस आश्वासन से सुरक्षित होते हैं कि मसीह हमारे साथ है। मसीह अपने वायदे को पूरा करता है। अपने वचनों के सम्बन्ध में मसीह की प्रतिज्ञा से बढ़कर कोई और शरणस्थान नहीं है।

निष्कर्ष: यीशु की इस तस्वीर को दिल में बिठा लें। जैतून का उपदेश उसे भविष्यद्वाणी वाले मसीह, तैयारी वाले मसीह, और रक्षा करने वाले मसीह के रूप में दिखाता है।

वह सुरक्षा जिसका यीशु ने समर्थन किया, आज्ञा मानने से मिलती है। यीशु ने वचन दिया, ''मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते'' (यूहन्ना 15:5)। उसमें बने रहना और उसके वचन में बने रहना एक ही बात है। यूहन्ना 15:7 में उसने कहा, ''यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।'' उसके वचन हम में केवल तभी बने रहते हैं जब हम उनका पालन करते हुए उन्हें मानते हैं। उसने आगे कहा:

> यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ। मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए (यूहन्ना 15:10, 11)।

इस प्रकार से मसीह की सेवा कौन नहीं करना चाहेगा? वह भविष्य को जानता है और वह इसमें से हमारी अगुआई करना चाहता है। उसे सब पता है कि हमें किन बातों का सामना करना पड़ेगा, वह चाहता है कि हम इन परीक्षाओं का सामना करने के लिए तैयार हो जाएं।

बड़े संघर्षों के लिए सामर्थ (13:5–13)

जैतून के उपदेश में पहले भाग में, यीशु ने यरूशलेम के आरम्भिक विनाश के बारे में अपने चेलों को कई चिह्न दिखाए। उसके इन चिह्नों को ''पहले के'' चिह्न या ''अभी नहीं के'' चिह्न कहा जा सकता है। वह अपने सुनने वालों को समझा रहा था कि यरूशलेम के विनाश के दिन से पहले जीवन कैसा होना था। उसने कहा कि उसके चेलों को बड़े संघर्षों में से गुज़रना पड़ना था; परन्तु तनाव के उन समयों को समय के अंत के चिह्नों के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए था। यीशु ने इन्हें ''अभी नहीं के'' चिह्नों के रूप में दिखाया यानी यह ''पीड़ाओं का आरम्भ ही'' था (13:8)। ये चिह्न यरूशलेम के विनाश की ओर संकेत करते थे।

जो कुछ यीशु ने अपने चेलों को कहा वह हमारे लिए व्यावहारिक और महत्वपूर्ण है; क योंकि हमारे ऊपर भी कठिन समय आएंगे। हम उनकी तरह यरूशलेम के विनाश की ओर नहीं बढ़ रहे हैं; परन्तु हम में से अधिकतर लोगों को किसी प्रियजन के छिनने, पंगु बना देने वाले रोग, या देश में होने वाले दंगों के परिणाम भुगतने पड़ेंगे। आवश्यक नहीं कि तनाव भरे समय पृथ्वी पर हमारे समय के अंत की पूर्वसूचना हों। परन्तु वे हमें यह अवश्य याद दिलाते हैं कि मसीह के विश्वासी चेलों के रूप में हमें दुनिया हिला देने वाले अनुभवों में से गुज़रना आवश्यक है। इसलिए हमारे लिए शांति और ताड़ना की उन बातों से दिल में बिठाना आवश्यक है जो यीशु ने अपने चेलों को तब दिए, जब वे यरूशलेम के विनाश की ओर बढ़ रहे थे।

1. *''झूठे शिक्षकों के सम्बन्ध में, उन से भ्रमित न हों।''* अपने उपदेश के बिल्कुल आरम्भ में, यीशु ने अपने चेलों से कहा, ''चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए। बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं वही हूँ!' और बहुतों को भरमाएँगे'' (13:5, 6)।

यीशु के उपदेश के मरकुस के विवरण में यह ताड़ना ''अभी नहीं का'' पहला चिह्न था। झूठे मसीहों का आना अलग और पहले का चिह्न था। यीशु ने अपने चेलों को इन झूठे शिक्षकों से भरमाए न जाने का आग्रह किया। लोगों ने अपने आपको मसीहा होना बताना था, परन्तु यीशु के चेलों ने उनकी बातों में नहीं आना था।

हमारे सामने ऐसी ही समस्याएं आएंगी। हम चाहे कई और वर्ष रहें या यीशु जल्दी आ जाए, परन्तु हमें झूठे शिक्षकों से सावधान रहना आवश्यक है। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया:

> परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिन का विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है। जो विवाह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे, जिन्हें परमेश्वर ने इसलिए सृजा कि विश्वासी, और सत्य के पहिचानने वाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएं (1 तीम. 4:1–3)।

विश्वास में अपने पुत्र को उसने यह भी बताया:

> क्योंकि ऐसा समय आएगा, जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा–कहानियों पर लगाएंगे (2 तीम. 4:3, 4)।

अपने पहाड़ी उपदेश में यीशु ने चेतावनी दी, ''झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेस में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में वे फाड़नेवाले भेड़िए हैं'' (मत्ती 7:15)।

2. *''राजनैतिक झगड़े के बारे में, इससे भयभीत न हों।''* यीशु ने कहा, ''जब तुम लड़ाइयाँ, और लड़ाइयों की चर्चा सुनो, तो न घबराना; क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा'' (13:7, 8)। यह ताड़ना ''अभी नहीं का'' दूसरा चिह्न है। इन चेलों के लिए कठिन समय आने थे यानी ऐसे समय जिनमें ''लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा'' होनी थी।

टेसिटुस ने पहली सदी की उस अस्थिरता का वर्णन किया जिसकी यीशु ने बात की।[79] परन्तु यीशु ने ज़ोर दिया कि कठिन समय अंत का चिह्न नहीं थे। चेलों को इन बातों को देखकर भयभीत नहीं होना था।

3. *''प्राकृति आपदाओं के सम्बन्ध में, उनसे भयभीत न हों।''* यीशु ने यह विवरण दिया: ''हर कहीं भूकम्प होंगे, और अकाल पड़ेंगे। यह तो पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा'' (13:8)।

यीशु का ''अभी नहीं'' का तीसरा चिह्न प्रकृति में उथल पुथल का था। उसने कहा कि अकाल और भूकम्प आ रहे हैं। प्रेरितों 11:28 में और जोसेफ़स के लेखों में कलौदियुस के शासनकाल में 46 ई. के आस-पास एक अकाल की बात है।[80] लौदिकिया और पोंपई में 60 ई. के दशक में भूकम्प आए।

यीशु ने कहा कि ये बातें आरम्भ ही थीं। यरूशलेम के विनाश के साथ इनसे भी बड़े दु:ख आने थे।

जीवन के अंत का आरम्भ करने से पहले ऐसी परीक्षाओं को हम कैसे सहते हैं? यीशु ने अपने चेलों को बताया कि आपदाओं से भयभीत न हों। उनके सामने आने पर, हमें अपने प्रभु की प्रतिज्ञाओं में और उसके वचन के आश्रय में, अपने आपको छिपा लेना आवश्यक है। उसमें अपना भरोसा जताते हुए, हम उन्हें अपने आनन्द, अपनी आशा और मसीह में अपने भरोसे को चुराने न दें।

4. *''सताव के सम्बन्ध में, इसकी चिंता न करो।''* यीशु ने कहा,

> परन्तु तुम अपने विषय में चौकस रहो; क्योंकि लोग तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे और तुम पंचायतों में पीटे जाओगे, और मेरे कारण हाकिमों और राजाओं के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उनके लिये गवाही हो। पर अवश्य है कि पहले सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए। जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहले से चिन्ता न करना कि हम क्या कहेंगे; पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया जाए वही कहना; क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है (13:9-11)।

इन शब्दों में ''अभी नहीं'' का चौथा चिह्न है। यह ताड़ना हमें नीरो के सताव के कारण मसीही लोगों के टेसिटुस के विवरण का ध्यान दिलाती है, जिसमें उसने उन्हें ''अपनी घृणाओं के लिए घृणा किए जाने वाले लोगों का वर्ग'' बताया।[81]

यीशु ने समझाया कि सताव उसके नाम के कारण आने थे (13:9; देखें मत्ती 10:22; 1 पतरस 4:14)। इस प्रकार के सताव प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिखाई देते हैं। यरूशलेम

की कलीसिया के मसीही लोगों के साथ अत्यधिक सताव हुआ और उन्हें यरूशलेम से निकाल दिया गया (प्रेरितों 8:4)। याकूब तो तलवार से मार डाला गया था जो प्रेरितों में पहला शहीद बना (प्रेरितों 12:2); 70 ई. से पहले दूसरे प्रेरितों (पतरस और पौलुस के जैसे) को भी मार डाला गया था।

सम्भवतया हम में से हर किसी पर किसी न किसी प्रकार का सताव आएगा। पौलुस ने हमसे यह मान लेने को कहा, ''पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे'' (2 तीम. 3:12)।

यीशु ने यह नहीं बताया कि सताव आने पर चेलों ने क्या करना था। उसने केवल चौकस रहने और इस की चिंता न करने को कहा कि हाकिमों को सौंप दिए जाने पर वे क्या करेंगे। उसने उन्हें इन परीक्षाओं के लिए चौकस रहने और जैसा उसने पहले बताया था, वैसा करने को तैयार रहने को कहा। वह अपने चेलों को बताना चाहता था कि पवित्र आत्मा ने उन्हें बता देना था कि वह क्या करें और कहें (13:11)।

इन आरम्भिक मसीही लोगों को कई मामलों में, पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा का दान दिया गया था; हमें नहीं दिया गया, परन्तु हमारे पास विरोध के समयों में हमारी अगुआई के लिए पवित्र शास्त्र में दिए पवित्र आत्मा के वचन हैं। हमारे पास यीशु के वचन ही हैं जिन्हें हम अपने हृदयों में बो सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम पहाड़ी उपदेश के उसके शब्दों को याद कर सकते हैं:

> धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है। इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था (मत्ती 5:10-12)।

आरम्भिक चेलों के साथ-साथ हमारे लिए, प्रभु की शिक्षा यही है कि ''चौकस रहो।''

निष्कर्ष: मरकुस 13:5-13 में से हमारे लिए जो बड़ी सच्चाई निकलकर बाहर आती है वह यह है कि आरम्भिक चेलों की तरह हम कठिन समयों में यीशु के लिए जीएं। बहुत सम्भावना है कि अपने सफ़र में हमें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। झूठी शिक्षा आ जाएगी, आपदाएं आएंगी और सताव आएगा। हम चौकस रहें और इनके लिए तैयार रहें। हम इनसे भयभीत न हों या इनकी परवाह न करें बल्कि उस अगुआई में जो यीशु ने हमें दी है भरोसा रखें।

हमारा नारा ''विश्वास में बने रहना'' है। यीशु ने कहा, ''जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा'' (13:13)। आग की झील सदा शांत नहीं रहेगी। तूफ़ान हमें कभी इधर कभी उधर ले जा सकते हैं। हमें तैयार रहना आवश्यक है क्योंकि कई मामलों में कोई अग्रिम सूचना नहीं दी जाएगी। परन्तु यीशु ने हमारे साथ चलने का वायदा किया। वह जानता है कि तूफ़ानों को कैसे थामना है और हमें उनके बीच में से कैसे निकालना है।

यीशु इस संसार के सब दु:खों को दूर करने के लिए नहीं आया। वह दु:खों में रहने के लिए आया ताकि वह हमें दिखा सके कि हमारे सामने आने वाली परीक्षाओं का सामना कैसे करना है। हो सकता है कि हमारे संघर्ष उतने अधिक न हों जितने आरम्भिक चेलों के थे, जिन्हें यरूशलेम

के विनाश की चेतावनी दी गई थी, परन्तु यदि हम उनका सामना यीशु की संगति में रहकर नहीं करते तो वे हमारे लिए विनाशकारी हो सकते हैं।

विनाश से भागना (13:14–23)

यीशु ने जब यरूशलेम के विनाश की भविष्यद्वाणी की, तो उसने उसका इस्तेमाल किया जिसे हम ''निकट'' के चिह्न कहते हैं (13:14–23)। इन ि चह्नों से यह संकेत मिला कि विनाश की प्रक्रिया वास्तव में चल रही थी। इन चिह्नों को देखकर चेलों ने नगर से भाग जाना था। जबकि अभी नहीं के चिह्न जो ''निकट'' के चिह्नों से पहले थे उनसे उन्हें बताया गया कि विनाश निकट भविष्य में होने वाला था, ''निकट'' के चिह्नों ने यह कहा कि ''विनाश हो रहा है। नगर से तुरन्त चले जाओ!''

यीशु के निर्देशों की बनाई जा सकने वाली एक प्रासंगिकता इस प्रश्न में है कि ''भयंकर त्रासदी से कैसे भागें?'' हमारे सामने यरूशलेम का विनाश नहीं हो रहा है परन्तु हमारे सामने नशे की त्रासदी, धन या सत्ता का लालच या कोई और परिस्थिति हो सकती है जो हमें शत्रु का सामना करके लड़ने के बजाय भाग जाने की कह रही हो।

यीशु ने अपने चेलों से ''निकट'' के चिह्नों को देखकर उन्हें क्या करने को कहा?

1. *''संकोच मत करो।''* यीशु ने कहा, ''अत: जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जहाँ उचित नहीं वहाँ खड़ी देखो, (पढ़नेवाला समझ ले) तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएँ'' (13:14)। यीशु द्वारा दिए ''निकट'' के पहले चिह्न में ''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु'' थी। दानिय्येल की पुस्तक से लिया गया यह वाक्यांश (9:27; 11:31; 12:11), विनाश के समय की बात करता है।

बेशक लूका 21:20 में इस गुप्त वाक्यांश का महत्व स्पष्ट कर दिया गया है: ''जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो।'' यीशु विशेष रूप में इस विवरण को सेनाओं के लिए लागू कर रहा था जो यरूशलेम को नष्ट करने के लिए आई। दानिय्येल की पुस्तक में ''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु'' वाक्यांश के दो नबूवती अर्थ होंगे – अंतियोकुस एपिफेनस के शासनकाल में आने वाली अपवित्रता और यरूशलेम का गिरना और यहूदियों के बलिदानों का बंद होना। यह ज़ोर देने के लिए कि यह वाक्यांश गुप्त अर्थ दे रहा था जो मसीही पाठक के लिए महत्वपूर्ण था, मरकुस ने ''पढ़ने वाला समझ ले'' को कोष्ठक में रख दिया।

यह वाला चिह्न चेलों के लिए पहाड़ों पर चले जाने का अत्यंत महत्वपूर्ण संकेत था। केवल इस प्रकार से ही वे अपने प्राणों को बचा सकते थे। जब भागने का समय आया, तो जिन्होंने यीशु की बात को माना था वे यरूशलेम से भागकर बच गए। यूसबियुस के अनुसार, जब टाइटस और उसकी सेना नगर की ओर आगे बढ़ी तो तो मसीही लोग पेला और अन्य स्थानों में यरदन नदी के पार जाकर बच गए।[82]

कई बार हमारे सामने निराशा भरी परिस्थितियां हो सकती हैं। उत्पत्ति 39:12 में यूसुफ़ के सामने ऐसी ही परिस्थिति आई थी। उसकी परिस्थिति इतनी कठिन थी कि उसे पता था कि उसे भागना पड़ेगा, चाहे इसका अर्थ अपना वस्त्र छोड़कर भागना ही हो। यूसुफ़ के लिए थोड़ी सी देर करना भी आत्मिक रूप में विनाशकारी हो सकता था। हमारे लिए ''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु''

पक्की विजय पाने के लिए निकट आ रही बुराई की कोई भी शक्ति हो सकती है जब तक हम बिना संकोच किए आत्मिक सुरक्षा के लिए भागते नहीं हैं।

2. *''देरी न करो।''* यीशु ने अपने चेलों को बताया,

> जो छत पर हो, वह अपने घर से कुछ ०लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए; और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे। उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय हाय! और प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े में न हो (13:15–18)।

यीशु अत्यधिक आवश्यकता के समय की बात कर रहा था। जिन्होंने उसकी चेतावनी को माना था उन्होंने अपने सफ़र के लिए आवश्यक सामान लेने के लिए अपने घरों में जाए बिना भाग जाना था। ''छत'' से जहां जाकर कोई काम कर सकता था, आराम कर सकता था, पहरा दे सकता था या प्रार्थना कर सकता था,[83] घर में या जाकर, या ''खेत'' से घर में जाकर समय बर्बाद करना था। कीमती सामान बचाने का किसी भी प्रयास ने भाग रहे व्यक्ति की जान को मूर्खतापूर्ण खतरे में डाल देना था।

सफ़र कठिन होना था। गर्भवती स्त्रियों के लिए विशेष परेशानी होनी थी, जैसा कि दूध पिलाने वाली स्त्रियों के साथ होना। फिर भी उन्हें भागना पड़ना था। सर्दी के मौसम में ये परेशानियां और बढ़ सकती थीं। पलिश्तीन की सर्दियां कड़ी हो सकती हैं। मौसम ठण्डा हो सकता है जिससे नाले बहने लग सकते हैं। जो भी समस्याएं हों, विश्वासी चेलों के लिए पहाड़ों पर भागना आवश्यक था।

यीशु द्वारा बताया गया ''निकट'' का उसका चिह्न निराशा भरा संघर्ष था जो यरूशलेम के गिरने पर आना था। एक बड़ा ''क्लेश'' आने वाला था (13:19)। यह वाक्यांश समय के काल का नाम नहीं है बल्कि यह उस दुःख के अधिक होने का वर्णन है, जो मसीही लोगों के कारण समय में कम कर दिया गया। जोसेफ़स ने घेराबंदी के आतंक का वर्णन किया,[84] जिसे अप्रैल से सितम्बर तक चली माना जाता है।[85] पवित्र नगर के विनाश पर अभूतपूर्व दुःख आया। यदि यह लम्बा चलता तो यरूशलेम के आस पास के बहुत से लोग मारे जाने थे।

जोसेफ़स ने दावा किया कि यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश में दस लाख से अधिक लोग मारे गए।[86] उसने परिस्थितियों की प्रचण्डता और क्रूरता की बहुत अधिक बातें लिखीं। उसने कहा कि इस प्रकार से कभी किसी नगर पर दुःख नहीं आया। लोगों को इस क्लेश आने को देखकर, सुरक्षा के लिए भाग जाना आवश्यक था।

हमें याद रखना होगा कि कुछ पस्थितियां इतनी बुरी और इतनी भयंकर हो सकती हैं कि हमें चाहिए कि जितनी जल्दी हो सके वहां से निकल जाएं। तूफ़ान के निकल जाने तक कोई आत्मिक आश्रय नहीं मिलने तक हम किसी ओर बात के लिए रुक नहीं सकते।

3. *''मुड़ो मत।''* यीशु ने आगे कहा, ''उस समय यदि कोई तुम से कहे, 'देखो, मसीह यहाँ है,' या 'देखो, वहाँ है,' तो प्रतीति न करना; क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और चिह्न और अद्भुत काम दिखाएँगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें'' (13:21, 22)।

यीशु ने मन्दिर के गिरने के सम्बन्ध में किसी प्रकार के व्यक्तिगत रूप में दर्शन देने का वायदा नहीं किया। उसने न्याय में आना था, परन्तु किसी और ढंग से नहीं। चेलों को किसी भी व्यक्ति के दावों को न मानने के चेतावनी दी गई, चाहे वह झूठा नबी हो या झूठा मसीह, जिसने चिह्न और चमत्कार दिखाकर लोगों को गुमराह करना चाहना था।

क्या दूसरों ने उस संदेश से जो मसीह ने दिया था, अलग देना था? हां, झूठे शिक्षक आस पास ही रहते हैं; परन्तु हमें उस सच्चाई में बने रहना आवश्यक है जो हमें हमारे उद्धारकर्त्ता ने दी है। हमें मसीह के पीछे चलने से रोकनी की अनुमति किसी संदेश को नहीं दी जानी चाहिए। झूठे नबी चिह्न और चमत्कार लेकर आ सकते हैं जो विश्वसनीय लगते हैं, परन्तु यदि हम मसीह के वचन का अध्ययन करने और उस पर लगे रहने लिए समर्पित हैं तो हम झूठ को आसानी से पकड़ सकते हैं। हम दूसरी शिक्षाओं की ओर न मुड़े।

शैतान के नबी चिह्नों और चमत्कारों का इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि वे हमें उनकी बात को सुनने के लिए मना लें तो वे हमें फुसला भी सकते हैं। हमें उन्हें तुरन्त ठुकरा देना, मसीह की अगुआई में बने रहना, और सुरक्षा के लिए ऊंचाई पर चले जाना आवश्यक है।

4. *"पीछे मुड़कर देखो।"* यीशु के चेलों ने बताए गए चिह्नों को देखकर सुरक्षा के लिए सीधे जाना आवश्यक था। उन्हें किसी भी चीज़ को लेने वापस नहीं जाना था, न पीछे मुड़ना था और न रुकना था जब तक वे आश्रय के अपने स्थान पर नहीं पहुंच जाते। प्रभु ने कहा, "जो छत पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए; और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे" (13:15, 16)।

नूह को सदोम से निकाले जाने के समय लगभग ऐसी ही परिस्थिति थी। स्वर्गदूत ने नूह से कहा, "... उठ, अपनी पत्नी और दोनों बेटियों को जो यहाँ हैं ले जा; नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म में भस्म हो जाएगा" (उत्पत्ति 19:15)। हमें आश्चर्य होता है कि उस विनाश के कगार पर लूत ने संकोच किया। तरस खाते हुए, तीनों स्वर्गदूतों ने उसके परिवार के लोग और "उसका हाथ पकड़े" और "उनको निकालकर नगर के बारह कर दिया" (उत्पत्ति 19:16)। उसे और उसके परिवार के लोगों को बताया गया, "अपना प्राण लेकर भाग जा; पीछे की ओर न ताकना, और तराई भर में न ठहरना; उस पहाड़ पर भाग जाना, नहीं तो तू भी भस्म हो जाएगा" (उत्पत्ति 19:17)। इस चेतावनी के बावजूद लूत की पत्नी ने उसकी ओर जिसे वह छोड़ रहे थे, मुड़कर देखा; उस नगर के विनाश में वह "नमक का खम्भा बन गई" (उत्पत्ति 19:26)।

विनाशकारी बुराई का सामना करने पर, हम इसे अपने पीछे छोड़ दें, सुरक्षा की ओर भागें और किसी दूसरे से कोई नया संदेश सुनने के लिए इधर उधर न मुड़ें। जब तक हम सुरक्षित स्थान के दायरे में नहीं पहुंच जाते तब तक आगे बढ़ते रहें। जहां से हम निकल आए हैं वहां बेकरार दिलों के साथ पीछे को न देखें।

निष्कर्ष: जब भागने का समय हो, तब हम सचमुच में भाग जाएं। यरूशलेम के विनाश के समय जो लोग वहां से नहीं गए वे नगर के साथ नष्ट हो गए। यीशु ने चेतावनी दी थी, "पर तुम चौकस रहो; देखो, मैं ने तुम्हें सब बातें पहले ही से बता दी हैं" (13:23)। जो लोग यरूशलेम के साथ मर गए यदि उन्होंने उस नगर के साथ जो कुछ होने वाला था उसके बारे में मत्ती, मरकुस या लूका में यीशु के वचनों को पढ़ा होता और उन पर विश्वास किया होता तो उन्हें पहले से पता

चल जाना था कि कैसे बचना है।

अच्छी बात यह है कि चाहे कैसा भी संकट क्यों न हो, यदि हम मसीह के वचनों को मानने को तैयार हों तो हम उस पर विजय पा सकते हैं। हम से हमारी अपनी ''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु'' के बारे में कठोर निर्णय लेने को कहा जा सकता है यानी ऐसा निर्णय जिसके लिए हमें उन सम्बन्धों को तोड़ना जो हमें किसी खतरनाक परिस्थिति से जोड़े रहते हैं और जितनी जल्दी हो सके भाग जाना, आवश्यक है। हमें रोकने वाले हाथ या पांव को काट डालने की यीशु की अति श्योक्तिपूर्ण बात को याद रखना आवश्यक है। उसने कहा कि यदि आंख हमें ठोकर दिलाए तो हम इसे निकालकर फेंक दें (9:47)। उसके वचन कठोर कार्यवाही करने को कहते हैं। हमारे लिए कोई भी बात इतनी कीमती नहीं होनी चाहिए जो हमें इसे मानने से रोके यदि यह हमें स्वर्ग में जाने से रोक रही हो।

आत्मिक रूप में कहें तो हम किसी भी बात पर विजय पा सकते हैं, यदि हम परमेश्वर की आज्ञा को मानने को तैयार हैं। यीशु ने अपने चेलों से यरूशलेम के लिए मर जाने, इसे पीछे छोड़ देने और पीछे न देखने को कहा। जिन्होंने उसकी बात मानकर वैसा ही किया, वे बच गए; जिन्होंने नहीं किया वे यरूशलेम के खतरनाक विनाश में मर गए होंगे। कई बार बहुतायत का जीवन पाने के लिए, हमें बिना देरी किए भागना, इधर उधर न मुड़ना और सुरक्षित स्थान पर पहुंचने तक, मुड़कर पीछे न देखना आवश्यक होता है।

यीशु के आने पर (13:24-27)

मरकुस 13:24-27 वाला संक्षिप्त भाग विशेषकर कठिन है। अध्याय 13 की मुख्य आयतों में से एक कहती है, ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक ये लोग जाते न रहेंगे'' (13:30)। यह आयत अध्याय को दो भागों में बांट देती है जिसमें पहला भाग यरूशलेम के विनाश से सम्बन्धित है, जबकि दूसरा भाग मसीह के द्वितीय आगमन से।

जब यीशु के चेले उसके साथ मन्दिर से निकल आए, तो उन्होंने उससे पूछा, ''हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी उस समय का क्या चिह्न होगा?'' (13:4)। उन्हें लग रहा होगा कि उनका प्रश्न केवल एक घटना से जुड़ा है। अपने दिमाग में उन्होंने यरूशलेम के विनाश को समय के अंत के साथ जोड़ लिया। उनका मानना होगा कि यरूशलेम अनन्त नगर है और यह समय के अंत तक गिर नहीं सकता।

अपना उत्तर देते हुए हमारे प्रभु ने दो अलग-अलग घटनाओं। यरूशलेम के गिरने और समय के अंत या द्वितीय आगमन की बात की। हमारा यह मानना सही हो सकता है कि 13:30 के पहले की हर बात यरूशलेम की विनाश का वर्णन है (केवल एक छोटे से अपवाद के साथ) जबकि 13:30 के बाद वाले विवरण समय के अंत में यीशु की वापसी की बात करते हैं।

13:30 में विभाजन बिन्दु से पहले वचन का हमारा यह भाग 13:24-27 सवाल उठाता है कि यह यरूशलेम के विनाश की बात है या यीशु के द्वितीय अगामन की। या तो यह यरूशलेम के विनाश की अत्यधिक प्रतीकात्मक बात है या मसीह की वापसी का प्राथमिक विवरण। यीशु द्वारा इस्तेमाल किए गए दो वाक्याशों को ध्यान में रखते हुए यह बाद वाला विचार इस वचन को और अधिक समझ देने वाला लगता है। पहले 13:24 में ''उस क्लेश के बाद'' वाक्यांश यरूशलेम के

विनाश के बाद परमेश्वर के कैलेंडर पर संसार को बदल देने वाली अगली घटना की ओर संकेत देता हुआ लगता है। इस व्याख्या के लिए हमें याद रखना आवश्यक है कि ''प्रभु के यहां एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर हैं'' (2 पतरस 3:8)। दूसरा वाक्यांश ''चारों दिशाओं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा'' करने के लिए स्वर्गदूतों के आने को दिखाता है (13:27), जो कि समय के अंत से जुड़ा लगता है।

इस विचार के लिए कि 13:24-27 यरूशलेम के विनाश का वर्णन प्रतीकात्मक रूप में करता है, अच्छे तर्क दिए जा सकते हैं, परन्तु प्रमाण ''समय के अंत'' के विचार का समर्थन करता हुआ लगता है। यदि यह हवाला द्वितीय आगमन से सम्बन्धित है जिसे यरूशलेम के विनाश के चिह्नों की यीशु की चर्चा के बीच में डाला गया है, तो यह समय के अंत का ही वर्णन है। विवरण की मुख्य बातें क्या हैं? हम हर बात को दूसरे वचनों के साथ मिलाने को सुनिश्चित करें, जो साफ़ तौर पर समय के अंत को दिखाते हैं।

1. *यीशु का आना तबाही का समय होगा।* यीशु ने कहा, ''उन दिनों में, उस क्लेश के बाद सूरज अन्धेरा हो जाएगा, और चाँद प्रकाश न देगा; और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे; और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी'' (13:24, 25)।

पतरस ने अंत का वर्णन ऐसे ही प्रलयकारी शब्दों के साथ किया: ''परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे'' (2 पतरस 3:10)। उसने आगे कहा,

> जब कि ये सब वस्तुएं, इसी रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए। और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिए कैसे यत्न करना चाहिए: जिस के कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएगे (2 पतरस 3:11, 12)।

पृथ्वी का जो कुछ होने वाला है, उसे ध्यान में रखते हुए, हमें याद रखना आवश्यक है कि यह संसार हमारा घर नहीं है। यीशु के आने पर हमें हमारा नया, सदा तक रहने वाला घर दिया जाएगा। पतरस के अनुसार यीशु की प्रतिज्ञा को मानते हुए हम ''नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी'' (2 पतरस 3:13)।

2. *यह समय प्रकाशन का होगा।* यीशु ने कहा, ''तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे'' (13:26)। बाद में यीशु ने कहा, ''जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे, तो वह अपनी महिमा के सिहांसन पर विराजमान होगा'' (मत्ती 25:31)। पौलुस ने लिखा, ''... प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा'' (2 थिस्स. 1:7, 8)। उसने यह भी घोषणा की, ''क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे'' (1 थिस्स. 4:16)। इसके अलावा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, यूहन्ना ने

बताया, ''देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आंख उसे देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेधा था वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। ...'' (प्रका. 1:7)।

इन वचनों को एक साथ मिलाए जाने पर उनसे एक मिली जुली तस्वीर मिलती है जो कुछ इस तरह से दिखाई देती है: यीशु के वापस आने पर वह अपने सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ अपनी पूरी महिमा में आएगा। वह बादलों में आएगा, और कुछ बादलों को आग लगी होगी, जो उसकी महिमा को दिखा रहे होंगे। हर आंख उसे आते हुए देखेगी; यह वे भी जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाने में योगदान दिया था, अपनी आंखों से उसे देखेंगे।

उसका आना उन पवित्र लोगों के लिए जो उस दुष्ट से वफ़ादारी से लड़ते रहे, राहत वाली बात होगी, और उनके लिए जिन्होंने उस समाचार को नहीं माना या उसके अनुसार नहीं जीवन नहीं बिताया, जो यीशु की मृत्यु के द्वारा बना और उसके जी उठने के द्वारा उसकी पुष्टि हुई।

3. *यीशु का आना उद्धार का समय होगा।* यीशु ने कहा, ''उस समय वह अपने दूतों को भेजकर, पृथ्वी के इस छोर से आकाश के उस छोर तक, चारों दिशाओं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा'' (13:27)।

यीशु के वापस आने का एक कारण अपने चेलों को अनन्त महिमा में ले जाना है। उसके आने पर प्रभु के सेवक ''उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से ... सदा प्रभु के साथ रहेंगे'' (1 थिस्स. 4:17)। यीशु अपने पवित्र लोगों को इकट्ठा करेगा कि वे उसकी महिमा करें। संसार के अंतिम दिन ''वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और सब विश्वास करने वालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा'' (2 थिस्स. 1:10)।

हम कह सकते हैं, ''जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है। रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है'' (रोमियों 13:11, 12)। परन्तु जब यीशु अपने प्रकाशन की महिमा से आकाश को चीरेगा तो हम कहेंगे, ''अब उद्धार प्रकट हुआ है; हमारे विश्वास को फल लग गया है। रात बीत गई है और उद्धार का दिन निकल आया है।'' वह दिन कितना शानदार होगा!

निष्कर्ष: यीशु का आना हर उस चीज़ से ऊपर होगा जिसे हम जानते हैं। उसका प्रकट होना संसार की सबसे बड़ी घटना होगी। यह सबके लिए क्रूस पर उसकी मृत्यु का शिखर, परमेश्वर की सनातन मंशा पूरा होना और पृथ्वी पर के समय का अंत होगा।

हमें दी गई यीशु की प्रतिज्ञाओं में से एक प्रतिज्ञा यूहन्ना 14:2, 3 में मिलती है: ''क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।'' यीशु का यह वायदा बहुमूल्य है और इसमें कोई दो राय नहीं कि वह इसे पूरा करेगा।

हम प्रभु के दो आगमनों के बीच में रह रहे हैं। पहला आगमन अब तो इतिहास बन चुका है, जबकि दूसरा आगमन भविष्यद्वाणी की बात है। दूसरा आगमन का होना पहले आगमन की तरह ही सुनिश्चित है। जो आ चुका है उसने वायदा किया है कि वह फिर आएगा। हमारे उद्धारकर्त्ता की ईमानदारी को नकारने की हिम्मत किसकी है? चाहे उसे वायदा किए हुए दो हज़ार वर्ष बीत चुके हैं, परन्तु वह वायदा आज भी उतना ही पक्का है जितना तब था जब उसने यह किया था।

प्रकाशितवाक्य 22:20 को सही ढंग से हम इस प्रकार से मान सकते हैं: ''यीशु मसीह जो इन बातों की गवाही देता है वह यह कहता है, 'हां, मैं शीघ्र आनेवाला हूं।''' उसके जवाब में उसके चेले कह सकते हैं, ''आमीन। हे प्रभु यीशु आ!''

अंजीर के पेड़ का दृष्टांत (13:28–31)

यरूशलेम के विनाश से सम्बन्धित अपनी भविष्यद्वाणी को खत्म करते हुए, यीशु ने अंजीर के पेड़ का सबक देते हुए अपने चेलों को समझाया। उसने उनसे कहा, ''अंजीर के पेड़ से यह दृष्टांत सीखो'' (13:28)। अंजीर के पेड़ में उनके लिए एक संदेश था, परन्तु उन्हें इसे समझना और इसकी आवश्यक प्रासंगिकता बनाना आवश्यक था।

फल से भरा अंजीर का पेड़ फलस्तीन में आम देखने को मिल जाता था। इससे बहुत से परिवारों को स्वास्थ्यवर्धक फल मिल जाता था। यदि किसी को इस पेड़ के काम करने और जीवन चक्र की समझ नहीं थी तो इसका अर्थ यह था कि उसे कृषि के बुनियादी नियमों का जो पहली सदी के संसार में पाए जाते थे पता नहीं था।

यीशु ने अपने चेलों को जो बताया था उसे सुनने के महत्व पर ज़ोर देते हुए, उन्हें अपनी नबूवती गवाही का उपयुक्त निष्कर्ष दिया। इस उदाहरण से जो प्रोत्साहन वह उन्हें दिलाना चाहता था, उसका हमारे लिए भी बड़ा सबक है।

1. *इस दृष्टांत से यीशु की बातों का उद्देश्य बताया गया।* एक अर्थ में, वह यह कह रहा था, ''मैंने जो बोला है उसके उद्देश्य को मत भूलो। मैंने तुम्हें उस त्रासदी में से जो तुम्हारे जीवनों को शीघ्र ही प्रभावित करेगी निकलने के लिए अगुआई देने के लिए तुम्हें चिह्न दे दिए हैं।''

इन चेलों ने यरूशलेम के विनाश के निकट होना था और उनके जीवन उनके अपने हाथों में होने थे। उनके यीशु की बातों को मानने या न मानने से विनाश के आने पर उनके कार्य किए जाने पर निर्भर था।

क्या हम उसके वचनों को दिए जाने वाले अपने जवाब के लिए यही नहीं कह सकते? उसकी शिक्षाएं नैतिक शिक्षाओं या चालाकी से बनाए गए वाक्यों से बढ़कर है। वे इस संसार में रहने और आने वाले संसार में अनन्त जीवन पाने से सम्बन्धित निर्देश हैं। यीशु ने अपने किसी भी चेले के लिए कभी नहीं चाहा कि वह उसके वापस आने के बारे में अनजान रहे। वह हमें उसके आने के समय के लिए तैयार करना चाहता था, चाहे यह अचानक ही होने वाला है।

2. *यीशु चाहता था कि उसके चेले उसके वचनों की सामर्थ को याद रखें।* अंजीर के पेड़ के अपने दृष्टांत में उसने कहा, ''जब उसकी डाली कोमल हो जाती, और पत्ते निकलने लगते हैं; तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है'' (13:28)। यीशु ने यरूशलेम के विनाश के आने को समझाने के लिए ग्रीष्मकाल के आने के इस संकेत का इस्तेमाल किया। उसके सुनने वालों ने उसके बताए हुए चिह्नों को देखकर जान जाना था कि यरूशलेम का अंत निकट है।

लोग प्राकृति की साधारण घटनाओं की समयसारिणी को देखकर कुछ संकेतों को देख सकते हैं। पेड़ में पत्तियों की निकलना ग्रीष्मकाल के निकट होने का पक्का चिह्न है। इसी प्रकार से यीशु के चेलों ने आत्मिक घटनाओं के समयों के चिह्नों को देखना था।

यीशु ने कहा, ''इसी प्रकार जब तुम इन बातों को होते देखो, तो जान लो कि वह निकट है

वरन् द्वार ही पर है'' (13:29)। वह उन्हें बता रहा था, ''[जब तुम चिह्नों को देखते हो], 'तो तुम्हें पता चल जाता है कि ग्रीष्मकाल निकट है।''' चेलों को विश्वास दिलाया जा रहा था कि उन्हें दी गई यीशु की चेतावनियां बेकार नहीं होनी थीं। उसके शब्दों में भविष्यद्वाणी की बड़ी सामर्थ थी।

आज हमारे लिए भी उसके वचनों में उतनी ही अनन्त सच्चाई है। उसने कहा, ''आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं'' (यूहन्ना 6:63)। उसने अपने वचनों के माने जाने की अनिवार्यता पर ज़ोर दिया: ''जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है'' (मत्ती 7:21)। यीशु पिता के वचन यानी उस वचन को लेकर आया जिनकी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

3. *यीशु अपने चेलों को अपने वचन के अटल होने को याद दिला रहा था।* उसने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक ये लोग जाते न रहेंगे। आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी'' (13:30, 31)।

यीशु के अनुसार, मन्दिर का गिरना वर्तमान पीढ़ी के बीत जाने से पहले हो जाना था। ये बातें 33 ई. में कही गई थी और 70 ई. में मन्दिर नष्ट हो गया। यीशु की भविष्यद्वाणी बिल्कुल वैसे ही पूरी हो गई जैसा उसने कहा था। ''ये सब बातें'' (ταῦτα πάντα, *tauta panta*) का अर्थ यही होगा कि अध्याय में कही पहली बातें (13:24-27 की भविष्यद्वाणियों के साथ) उस पीढ़ी के यीशु बात कर रहा था, पृथ्वी पर से चले जाने से पहले-पहले, पूरी हो जानी थीं।

यीशु ने ज़ोर दिया कि उसकी बातें अटल हैं (देखें मत्ती 23:36; 24:2, 3, 34)। उसने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, ये सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेंगी'' (मत्ती 23:36)। मन्दिर के सम्बन्ध में, उसने कहा, ''यहाँ पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा जो ढाया न जाएगा'' (मरकुस 13:2)। अपनी सच्चाई और वफ़ादारी में यीशु की बातें आकाश और पृथ्वी के बाद भी रहेंगी।

निष्कर्ष: यीशु के वचन संसार की सबसे विश्वसनीय बातें हैं। उसके वचन सबसे उद्देश्यपूर्ण, सबसे सामर्थी और सबसे टिकाऊ हैं। अनिश्चित्ता के इस संसार में हम सब विश्वसनीयता की खोज में हैं।

हम उसमें जो सच है, जो समय और खराई की परीक्षाओं में दृढ़ रहे, हम उसमें भरोसा चाहते हैं। यीशु ने हमें ऐसे ही वचन दिए हैं।

उदाहरण के लिए, आज से एक हज़ार वर्ष बाद हम कहां होंगे? क्या हमारा अस्तित्व नहीं रहेगा? हमारा उद्धारकर्त्ता इस प्रश्न को ''न'' कहता है। उसने हमें अनन्त जीवन दिलाया है। हमें सदा तक रहने के लिए बनाया गया है। इस विषय पर अधिकार से केवल वही बात कर सकता है जिसके पास अनन्त वचन हैं। वह अनादि पिता की ओर से ही होगा और उसके पास हमारे लिए अब और सदा तक रहने के लिए उसके वचन होने आवश्यक हैं।

यीशु हमारा सच्चा और एकमात्र उद्धारकर्त्ता है। वह मार्ग, सत्य और जीवन है; बिना उसके द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता (यूहन्ना 14:6)। उसके आरम्भिक चेलों के लिए इस सच्चाई को जानना आवश्यक था; और सुसमाचार के विवरणों के द्वारा, हमें भी इस सच्चाई को

जानना आवश्यक है।

तैयारी की आवश्यकता (13:32–37)

जैतून के उपदेश में यीशु ने तीन प्रकार के चिह्नों की बात की। उसने, यानी तैयारी के मसीह ने, अपने चेलों को यरूशलेम के विनाश के सम्बन्ध में जो कुछ होने वाला था, उसके लिए उन्हें तैयार करने के लिए ''पहले'' के चिह्न दे दिए। चेलों को यह संकेत देने के लिए कि उन्हें तुरन्त नगर से निकलना पड़ेगा, उसने ''निकट'' के चिह्नों का इस्तेमाल किया। ''निकट'' के इन चिह्नों में तुरन्त कार्यवाही करने को कहा गया।

यह पद्य यानी 13:32–37, उपदेश का दूसरा मुख्य भाग है, चाहे यह पहले वाले भाग से बहुत छोटा है। इस भाग में यीशु ने प्रेरितों के प्रश्न के दूसरे भाग का उत्तर दिया, जिसमें समय के अंत में उसकी वापसी की बात थी।

अपनी वापसी के सम्बन्ध में, यीशु ने लोगों को चेतावनी देने के लिए कोई चिह्न नहीं दिया। उसने कहा कि उस दिन और घड़ी का केवल पिता को पता है (13:32)। यह कहकर कि उसे समय के अंत की जानकारी नहीं है, उसने अपने ज्ञान के सीमित होने को दिखाया। शायद उसके यहां रहते समय, उसके सांसारिक जीवन में सीमित ज्ञान के लिए अपने आपको देना शामिल था (देखें फिलि. 2:5–11)। इस अवसर पर, न तो उसे और न स्वर्गदूतों को ही, समय के अंत का पता था।

इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु की वापसी की बात पक्की भी है और अनिश्चित भी। उसने कहा, ''मैं फिर आऊंगा'' (यूहन्ना 14:3); इस अर्थ में उसका आना पक्का है। परन्तु उसने यह भी कहा, ''उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता'' (मरकुस 13:32)। इसलिए समय के अर्थ में इसका पता नहीं है। अपनी वापसी के इस अनिश्चित पहलू के कारण यीशु ने अपने चेलों को तैयारी की अवस्था में रहने की आज्ञा दी।

1. *उन्हें ''चौकस रहकर'' तैयारी में रहने को कहा गया।* उसने कहा, ''जागते और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा'' (13:33)। मत्ती 24:42 में लिखे अनुसार उसने कहा, ''इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा।'' प्रभु के आने की अनिश्चितता के कारण लोगों के लिए समय के प्रभु की सुनना, उसकी चेतावनी पर ध्यान देना और तैयार सेवकों के रूप में रहना आवश्यक है।

पौलुस, पतरस और यूहन्ना ने यीशु की वापसी के अकस्मात होने को चोर के आने के साथ मिलाया (1 थिस्स. 5:2; 2 पतरस 3:10; प्रका. 3:3; 16:15)। यीशु ने स्वयं कहा, ''परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा तो जागता रहता, और अपने घर में सेंध लगने न देता'' (मत्ती 24:43)। उसका ज़ोर लोगों चौकस रहने पर है। चोर के लिए मिट्टी की ईंटों को निकालकर दीवार में से चोरी करना आसान हो सकता था यानी वह दीवार में से निकल सकता था। चोर के इस प्रकार से घर में घुस आने की तरह, यीशु अकस्मात, अचानक और फुर्ती से आ जाएगा।

2. *उन्हें ''उद्देश्यपूर्ण होते हुए'' तैयारी में रहने को कहा गया।* यीशु ने कहा, ''यह उस मनुष्य की सी दशा है, जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाए, और अपने दासों को अधिकार

दे: और हर एक को उसका काम बता दे, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दे'' (13:34)। सेवक, जिसे पता नहीं है कि उसका स्वामी कब लौटेगा, अपने स्वामी के प्रति वचनबद्धता के अधार पर, हर समय तैयार रहना चाहिए। उसका उद्देश्य अपने स्वामी के लौटने पर तैयार होना है, उसका लौटना चाहे जब भी हो। यीशु ने कहा,

> इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, साँझ को या आधी रात को, या मुर्ग़ के बाँग देने के समय या भोर को। ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए। और जो मैं तुम से कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ: ''जागते रहो!'' (13:35-37)।

समय का अंत ''नूह के दिनों'' के जैसा होगा, जब प्रलय आई थी। लोगों के सामान्य व्यवहारों में लगे होने के साथ मानवीय जीवन (1 पतरस 3:20; देखें उत्पत्ति 6; इब्रा. 11:7) सामान्य की तरह चल रहा था। अचानक प्रलय से उनकी गतिविधियों में रुकावट पड़ गई और लोग बिना तैयारी के फंस गए (देखें लूका 17:26, 27)। इसी प्रकार से मनुष्य के पुत्र का अचानक आना होगा। इन लोगों की गलती उन कामों में लगे होना नहीं था, क्योंकि वे तो जीवन की स्वाभाविक गतिविधियां थीं। उनकी गलती समयों के प्रति अनजान होना और परमेश्वर से भेंट के लिए तैयार न होना था। नूह के प्रचार के बावजूद (देखें 2 पतरस 2:5), लोग प्रलय के आने के किसी प्रकार के विचार के बिना रह रहे थे। उन्होंने अंत के लिए कोई उद्देश्यपूर्ण तैयारी नहीं की थी।

मत्ती के विवरण में, हम यीशु द्वारा दिए गए इस विवरण को देखते हैं: ''उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी'' (मत्ती 24:40, 41)। इन दो उदाहरणों में पुरुषों और स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले प्रतिदिन के काम को दिखाया गया है। एक काम करने वाले को उठा लिया जाएगा यानी एक तो मसीह के साथ स्वर्ग में जाने को तैयार होगा, जबकि दूसरा तैयार नहीं होगा। कुछ लोग देख रहे होंगे और कुछ उसके आने पर बिना तैयारी के पाए जाएंगे। कुछ महिलाएं तैयार होंगी और कुछ तैयार नहीं होंगी।

3. *उन्हें ''विश्वासी बने रहकर'' तैयारी में रहने को कहा गया।* मत्ती के विवरण के अनुसार यीशु ने उस वफ़ादारी पर ज़ोर देते हुए जिसकी उम्मीद वह अपने सेवकों से रखता था, इस दृष्टांत का इस्तेमाल किया:

> अत: वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी ने अपने नौकर-चाकरों पर सरदार ठहराया कि समय पर उन्हें भोजन दे? धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। मैं तुम से सच कहता हूं, वह उसे अपनी सारी संपत्ति पर अधिकारी ठहराएगा। परन्तु यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे कि मेरे स्वामी के आने में देर है, और अपने साथी दासों को पीटने लगे, और पियक्कड़ों के साथ खाए-पीए। तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उस की बाट न जोहता हो, और ऐसी घड़ी जिसे वह न जानता हो, तब वह उसे भारी ताड़ना देगा और उसका भाग कपटियों के साथ ठहराएगा: वहां रोना और दांत पीसना होगा (मत्ती 24:45-51)।

प्रभु के हर सेवक को पता है कि प्रतीक्षा करते हुए काम करना आवश्यक है। जो कोई अपना काम ईमानदारी से करता है उसे जिम्मेदारी वाला ऊंचा पद देकर काम दिया जाएगा। उसका स्वामी उसे आशीष देगा और इनाम देकर उसका सम्मान करेगा।

इस उदाहरण वाला दुष्ट सेवक जिसे अपने प्रभु के आने पर संदेह था (देखें 2 पतरस 3:4) उसने अपने पद का दुरुपयोग किया, बिना तैयारी के पाया गया। उसे अपने पद से निकाले जाने का भयंकर परिणाम भुगतना पड़ा।

बिना तैयारी वाले सेवक को बाहर के अंधकार में फेंक दिया गया जहां रोना और दांतों का पीसना था। उसके स्वामी द्वारा उसे ठुकराया जाना उसके लिए पीड़ा और दुःख का कारण होना था। ऐसी बातें सुसमाचार के विवरणों में सात बार मिलती हैं,[87] जिनमें बड़ी पीड़ा और अनन्त दण्ड का वर्णन है।

निष्कर्ष: यीशु बताता है कि हमें उसके आने के लिए तैयारी करना आवश्यक है। उसने हमें बताया है कि वह फिर से आ रहा है, पर हम नहीं जानते कि वह कब आएगा और हमें उसके आने की राह देखते रहनी चाहिए।

क्या यह सच है कि आरम्भिक मसीहियों को यीशु के लगभग तुरन्त लौट आने की उम्मीद थी परन्तु वे गलत थे? कुछ मामलों में जैसा कि थिस्सलुनीके के लोग, ऐसा हो सकता है (2 थिस्स. 2); परन्तु अधिकतर मामलों में वे बिना यह जानते हुए कि यीशु कब लौटेगा, ईमानदारी से उसकी राह देख रहे थे। वे उम्मीद की सोच और तैयारी की आवश्यकता को पूरा कर रहे थे, जो हर मसीही को दी जाती है। उनका विश्वास था कि वह किसी समय लौट आएगा, और वे उस समय के लिए तैयार थे। उनका विश्वास था कि एक दिन, एक प्रतापी दिन, उसके लौटने के दिन को देखेंगे।

पौलुस के अनुसार, थिस्सलुनीके के लोगों का मन परिवर्तन यीशु के लौटने की उम्मीद शामिल थी:

> क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम क्योंकि मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो। और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उस ने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है (1 थिस्स. 1:9, 10)

हमें चौकस, उद्देश्यपूर्ण और विश्वासी बने रहकर तैयार रहना आवश्यक है। जब हम हर दिन को ऐसे देखते हैं जैसे यह हमारा अंतिम दिन हो तो हम चौकस होते है; जब हम हर दिन में ऐसे रहना चुनते हैं जैसे आज ही यीशु का जाएगा तो हम उद्देश्यपूर्ण हैं और जब हम इस प्रकार से जीवन बिताते हैं जैसे हम अपने कामों का हिसाब देने के लिए किसी भी समय तैयार हों तो हम विश्वासी होने को दिखाते हैं।

टिप्पणयां

[1]समानांतर विवरण मत्ती 24:1, 2 और लूका 21:5, 6 में हैं। [2]यहूदी साहित्यिक में इसे आज भी ''दूसरा मन्दिर'' कहा जाता है। [3]ई. पी. सैंडर्स, *जूडिसम: प्रैक्टिस ऐंड बिलिफ, 63सीई–66सीई* (मिनियापोलिस: फोर्ट्रेस प्रेस, 2016), 86. [4]ऐलन ब्लैक, *मरकुस,* द कॉलेज प्रेस NIV कॉमैंट्री (जोपलिन, मिसोरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 1995), 228. [5]जोसेफ़स *वार्स* 5.5.6 [224]। यह तय किया गया है कि मन्दिर के माप में इस्तेमाल किया गया हाथ 20.67 इंच था, ''शाही हाथ'' न कि छोटा रूप। (लीन रिटमेयर, ''लोकेटिंग द ओरिजनल टैम्पल माउंट,'' *बिबलिक आरक्योलोजिकल रीव्यू* [मार्च/अप्रैल 1992]: 24–26.) [6]जोसेफ़स *वार्स* 5.5.4 [210]; *एंटिकुइटीज़* 15.11.3 [395]। [7]जोसेफ़स *एंटिकुइटीज़* 19.6.1 [294]। [8]जोसेफ़स *वार्स* 5.5.7 [231–35]। [9]द *ज़ौंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी,* सम्पा. मेरिल सी. टेनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1963), 834 में जॉन बी. ग्रेबिल, ''टैम्पल।'' ऐसा विवरण जोसेफ़स *वार्स* 5.5.6 [222] में दिया गया है। [10]बेबीलोन ताल्मुड *सुखाह* 51बी.

[11]समानांतर विवरण मत्ती 24:3 और लूका 21:7 में दिए गए हैं। [12]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ऐंड फिलिप वाई. पेंडल्टन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हार्मनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 620–21 में है। [13]स्टैफोर्ड नॉर्थ, *आर्मगेडन अगेन ?: ए रिप्लाई टू हाल लिंडसे* (ओक्लाहोमा सिटी: ओक्लाहोमा क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी ऑफ़ साइंस एंड आर्ट्स, 1991), 42. [14]बेशक मत्ती और लूका ने वंशावलियों का इस्तेमाल किया क्योंकि उन्हें पता था कि उनकी सूचियों को यहूदी दस्तावेज़ों के साथ मिलाया जा सकता है। 70 ई. के बाद यह सम्भव नहीं रहा। (देखें मत्ती 1; लूका 3.) [15]13:24–27 पर टिप्पणियां देखें। NASB के कुछ मद्रणों में आयत 24 से पहले ''मसीह की वापसी'' शीर्षक है। (तुलना मत्ती 24; मरकुस 13 और लूका 21.) आगे के अध्ययन के लिए देखें सेलरस एस. क्रेन, *मत्ती 14–28,* ट्रुथ फ़ॉर टुडे कॉमें सीरीज़ (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2011), 307–42. [16]यूं हुआ होगा कि स्वर्ग में वापस जाने के बाद, यीशु को पता चला कि अंतिम न्याय कब होगा। पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर ने ''एक दिन ठहराया है'' (प्रेरितों 17:31) जब संसार का न्याय किया जाएगा। [17]बहुत से लोग मत्ती 24:29–31 यीशु के द्वितीय आगमन से जुड़ा मानते हैं। [18]समानांतर विवरण मत्ती 24:4–9, 13, 14 और लूका 21:8–19. [19]जोसेफ़स *एंटिकुइटीज़* 20.5.1 [97–98]; 20.8.6, 10 [167–70, 188]; *वार्स* 2.13.4–5 [259–63]। [20]जोसेफ़स *एंटिकुइटीज़* 18.1.1 [4]।

[21]जोसेफ़स *वार्स* 2.13.5 [261–63]. [22]मैक्गर्वे ऐंड पेंडल्टन, 622. [23]''तोगा ग्रहण करने'' का समारोह एक रस्म थी जिसमें एक रोमी युवक को पुरुष के रूप में पहचान दी जाती थी। [24]एच. डी. कलानेर–अमेरिकन, ''ए रिवाइज़ड अर्थक्यूक – कैटालोजी ऑफ़ पैलेस्टाइन,'' *इज़्राएल एक्सफलोरेशंस जर्नल* 1 (1950–51): 225. [25]स्यूटोनिस *टवेलव केसरस* 5.18. [26]टकिटस *अनालस* 12.43. [27]मैक्गर्वे ऐंड पेंडल्टन, 622. [28]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मरकुस,* न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1975), 517. [29]टकिटस *अनालस* 15.38–44. [30]डब्ल्यू. एम. रामसे ने राम की ओर से मसीही लोगों के सताव और इसके कई कारणों को को कलमबद्ध किया। (डब्ल्यू. एम. रामसे, द *चर्च ऑफ़ द रोमन इम्पायर बिफोर 170 ए.डी.* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस], 1954.)

[31]पलिनी *अपिस्टल* 10.96. [32]टरटुलियन *अपोलोजी* 50. [33]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे ने माना कि ''यहां 'अंत' का अर्थ 'युग का अंत' अर्थात क्लेश के युग का है'' (वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी डिलिजेंट [मार्क],* न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री [कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: डेविड सी. कुक, 1987], 150)। इस विचार का कोई प्रमाण नहीं है। [34]मैक्गर्वे ऐंड पेंडल्टन, 318. [35]टेसिटुस *ऐनल्स* 15.44; स्यूटोनिस *टवेलव केसरस* 16.2. [36]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट ऐंड अदर अरली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* 3रा संस्क., संशो. एंव सम्पा. फ्रेड्रिक विलियम डेंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 1039. [37]मत्ती 24:15–22 का समानांतर मरकुस 13:14–20 है (देखें लूका 21:20–24)। [38]ये पदनाम दानिय्येल 11:31 और 12:11 में मिलता है, और यह 1 मक्काबियों 6:7 में अंतियोकुस की ''घिनौनी'' बात को कहा गया है। [39]NASB में यह संकेत देने के लिए कि इसे पुराने नियम से दोहराया गया है इस वाक्यांश के सभी अक्षरों को बड़ा रखा गया है। अतिरिक्त अध्ययन के लिए, देखें एडवर्ड पी. मायर्स, नील टी. प्रयोर, ऐंड डेविड आर. रिचटिन, *दानिय्येल,* ट्रुथ फ़ॉर टुडे कॉमैंट्री सीरीज़ (सरसी, आरकैंसा: सिसोर्स पब्लिकेशंस, 2012), 326, 384–85, 420–21. [40]ESV में ''उजाड़ने वाले पर आदेश

दिया गया अंत न होने तक, उजाड़ने वाला'' की बात करता है।

[41]जोसेफ़स ने ''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु'' का अर्थ वही बताया जो यहां पर यीशु ने दिया। जोसेफ़स ने कहा, ''दानिय्येल ने भी रोमी सरकार के सम्बन्ध में लिखा, और हमारा देश उनके द्वारा उजाड़ दिया जाना चाहिए'' (जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 10.11.7 [276])। [42]1 कुरिन्थियों 3:17 कहता है, ''यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।'' [43]यूसबियुस *एक्लेस्यिटिकल हिस्टरी* 3.5. [44]जोसफ़स *वार्स* 2.20.1 [556]. [45] मत्ती 24:21 के डारबी के अनुवाद और स्कोफिल्ड रैफ़रंस बाइबल में ''बड़े क्लेश'' शब्दों की वाक्य रचना को बिना आवश्यक प्रमाण के प्रिमिलेनियम डॉक्ट्रिनों, हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षाओं का समर्थन देता है। [46]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द वियर्सबे बाइबल कॉमैंट्री: न्यू टैस्टामैंट* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: डेविड सी. कुक, 2007), 127. [47]वहीं। [48]यूसबियुस *एक्लेस्यिटिकल हिस्टरी* 3.5. जोसेफ़स ने भयावह परिस्थिति और घटनाओं के बारे में विस्तार से बताया। (जोसेफ़स *वार्स* 5.10.1–4 [420–39]।) [49]हैनरी बार्कले सवेटे, *कॉमैंट्री ऑन मरकुस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1977), 306. [50]एल. ए. स्टॉफ़र, *मरकुस,* ट्रुथ कॉमैंट्रीज़, गार्डियन ऑफ़ ट्रुथ फ़ाउंडेशन (बॉलिंग ग्रीन, कैंटकी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1999), 319.

[51]समानांतर विवरण मत्ती 24:19–22 और लूका 21:23, 24 में हैं। [52]पॉल एल. मायर ने सैसटियुस गैलस द्वारा अचनाक निकाले जाने को 66 ई. के अक्तुबर में रखा। (जोसेफ़स, *जोसेफ़स: द इसेंटियल राइटिंग्स,* अनु. व सम्पा. पॉल एल. मायर [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1988], 288.) [53]जोसेफ़स *वार्स* 5.13.7 [571]; 6.3.4 [201–13]. [54]जोसेफ़स *वार्स* प्रेफेस 4 [12]. [55]जोसेफ़स *वार्स* 2.19.7 [540]। [56]जोसेफ़स *वार्स* 5.10.5 [442]। [57]जोसेफ़स *वार्स* 5.1.4 [21]। [58]एक सममानांतर विवरण मत्ती 24:23–25 में है। [59]उसने यीशु को ''बुद्धिमान मनुष्य, यदि उसे मनुष्य कहना उचित हो, ... अद्‌भुत कामों को करने वाला कहा।'' (जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 18.3.3 [63–64])। उसने याकूब को ''यीशु का जिसे मसीह कहा जाता था भाई'' बताया (जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 20.9.1 [200])। [60]समानांतर विवरण मत्ती 24:29–31 और लूका 21:25–28 में हैं।

[61]ऐल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: मत्ती–मरकुस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1955), 259. [62]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री,* अंक 1, *मत्ती ऐंड मरकुस* (डेस मोइनेस: यूजीन एस. स्मिथ, 1875), 210. [63]बार्नस, 259. [64]जे. मार्सेलस कि क, *मत्ती ट्वेंटी–फोर: एन एक्सपोज़िशन* (स्वेनगेल, पा.: बाइबल ट्रुथ डिपोट, 1948), 77–79. [65]वहीं, 80. [66]समानांतर विवरण मत्ती 24:32–35 और लूका 21:29–33 में हैं। [67]किक, 83. [68]वहीं। [69]वहीं। [70]हैंड्रिक्सन, 540.

[71]मैक्गार्वे, *कमैंट्री,* 212. [72]एक समानांतर विवरण मत्ती 24:36 में है। [73]मत्ती 24:36–45 में और कई दृष्टांत हैं जो इस उपदेश को बड़ा कर उसके आगमन को और अधिक स्पष्ट कर देते हैं। [74]किक, 91. [75]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मरकुस,* दूसरा संस्करण, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1956), 336. [76]वहीं, 337. [77]देखें 11:27–12:40; मत्ती 21:23–23:39; लूका 20:1–47. [78]जोसेफ़स *वार्स* 6.9.3 [420]. [79]टेटियस *हिस्टरीज़* 1.2. [80]जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 3.15.3 [320]।

[81]टेटियस *अनालस* 15.44. [82]यूसबियुस *इक्लेस्टिकल हिस्टरी* 3.5. [83]देखें यहोशू 2:6; 1 शमूएल 9:25; यशायाह 22:1; प्रेरितों 10:9. [84]जोसेफ़स *वार्स* 5.12.3 [512–17]; 5.13.7 [567–71]; 6.3.3 [193–200]। [85]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मत्ती,* भाग 2, द लिविंग वर्ड कॉमेंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 126. जोसेफ़स ने संकेत दिया कि घेराबंदी फसह और अखमीरी रोटी के पर्व के समय हुई (जोसेफ़स *वार्स* 6.9.3 [421]), और इतिहासकारों ने लिखा है कि नगर का विनाश 7 सितम्बर, 70 ई. को हुआ। (फ्रांसिस लिबर, एडी., *एनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना,* न्यू एडी. [बोस्टन: बी. बी. मुसे एंड कं., 1854], 219.) [86]जोसेफ़स *वार्स* 6.9.3. [420]। उसने यह भी लिखा कि 97,000 को बंदी बनाकर ले जाया गया था। टेसिटुस ने मरने वालों ी संख्या 6,00,000 बताई। (टेसिटुस *हिस्ट्रीज़* 5.13.) [87]देखें मत्ती 8:12; 13:42, 50; 22:13; 24:51; 25:30; लूका 13:28.